महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 1 | अंक - 15 | मुंबई, 1 सितंबर से 15 सितंबर 2013 | मुल्य-2/- रुपए | पृष्ठ -8

वित्त मंत्री आश्वस्त

'जल्दी संभलेगा रुपया'

मुंबई। देश की मुद्रा रुपया जहां डॉलर के मुकाबले गुरुवार को ६५ के स्तर से नीचे चला गया, वहीं वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है, रुपये में शीघ्र ही स्थिरता आएगी। चिदंबरम ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि घबराने की कोई जरूरत नहीं है। हमें पूरा विश्वास है कि जल्द ही बाजार में स्थिरता आएगी। वित्त मंत्री ने कहा कि मुद्रा बाजार में अस्थिरता को स्वीकार नहीं किया जा सकता है और सरकार स्थिति में सुधार लाने की कोशिश कर रही है। उन्होंने कहा कि हम मुद्रा का कोई विशेष स्तर निश्चित करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। हम स्थिर मुद्रा चाहते हैं। रुपया आज जरूरत से ज्यादा नीचे चला गया है। एक बार फिर रुपये की शुरुआत तेज गिरावट के साथ ही हुई है। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 79 पैसे की भारी कमजोरी के साथ 64.90 पर खुला। वहीं डॉलर के मुकाबले रुपया 64.11 पर बंद हुआ था। हालांकि शुरुआती कारोबार में ही डॉलर के मुकाबले रुपये ने 65 का स्तर भी तोड़ दिया। और, अब डॉलर के मुकाबले रुपया अबतक के रिकॉर्ड निचले स्तर 65.50 तक टूट गया है। रेलिगेयर सिक्योरिटीज की करेंसी एक्सपर्ट सुगंधा सचदेवा का कहना है कि आगे डॉलर के मुकाबले रुपये में 65.5 का स्तर देखने को मिल सकता है। दरअसल ऑयल इंपोर्टरों की डॉलर मांग बढ़ने से भी रुपये पर दबाव बढ़ रहा है। लेकिन निचले स्तरों से रुपये में सुधार की गुंजाइश बनी हुई है। वहीं मैक्लाई फाइनेंशियल के डिप्टी सीईओ पार्थ भट्टाचार्य का कहना है कि फेड के मिनिटस

के चलते रुपये में गिरावट आई है। रुपये के लिए 64.30 के स्तर रेसिस्टेंस नजर आ रहा है, लेकिन ये स्तर टूटता है तो डॉलर के मुकाबले रुपया 67 के स्तर तक जाने की आशंका है।

लोकसभा में खाद्य सुरक्षा बिल मंजूर

नई दिल्ली: लोकसभा ने दी खाद्य सुरक्षा विधेयक को मंजूरी दे दी है। विधेयक को राज्यसभा की मंजूरी मिलने के बाद भारत दुनिया के उन चुनिन्दा देशों में शामिल हो जाएगा, जो अपनी अधिकांश आबादी को खाद्यान्न की गारंटी देते हैं।

1,30,000 करोड रुपये के सरकारी समर्थन से खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम दुनिया का सबसे बडा कार्यक्रम होगा। इसके लिए 6.2 करोड टन खाद्यान्न की आवश्यकता होगी। यह विधेयक प्रति व्यक्ति प्रति माह पांच किलो चावल, गेहूं और मोटा अनाज क्रमशः 3, 2 और 1 रुपये प्रति किलो के तयशुदा मूल्य पर गारंटी करेगा।

अंत्योदय अन्न योजना के तहत कवर लगभग २.४३ करोड अत्यंत गरीब परिवारों को हालांकि ३५ किलो खाद्यान्न प्रति परिवार प्रति माह मिलेगा।

विदर्भ के लिए 2000 करोड़ रुपये का पैकेज, पृथ्वीराज चव्हाण

मुंबई महाराष्ट्र के विदर्भ में कई दिनोंसे लगातार हो रही अधिक वर्षा से काफी नुकसान हुआ हैं जिसके लिए मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने अतिवृष्टि में मारे गए लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए प्रत्येक मृतक के परिवार को ढाई लाख रुपये देने की घोषणा की हैं

मुख्यमंत्री ने विदर्भ में अतिवृष्टि प्रभावित जनता की मदद के 2000 करोड के नए पैकेज की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि विदर्भ में अभी भी भारी बारिश शुरू है। इस लिए परिस्थितियों की सतत समीक्षा जारी रहेगी और जरूरत के हिसाब से मदद के लिए कदम उठाए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने बताया कि अतिवृष्टि प्रभावित लोगों की मदद के लिए 374 करोड 50 लाख रुपए खर्च किए जाएंगे। इमर्जेंसी फंड कलेक्टरों और डिविजन कमिश्नरों के पास उपलब्ध कराया जायेगों बारिश से राज्यभर में 237 लोगों की मृत्यु हुई है। जिसमें 107 मौतें विदर्भ में हुई हैं। इनके परिजनों को ढाई लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी जाएगी। डेढ़ लाख रुपए राज्य सरकार की ओर से व एक लाख रुपए की अतिरिक्त मदद सीएम राहत कोष से दी जाएगी। मृत जानवरों के बदले भी 25 हजार रुपये प्रति जानवर के हिसाब से आर्थिक मदद दीजाएगी। साथ ही बाढ व अतिवृष्टि, धान की फसल, सडकों की मरम्मत, अन्य सार्वजनिक संपत्तियों को पहुची हानी के लिए यह फंड उपयोग में लाया जायेगें

भारत में लघु उद्योगों व कृषि पर ध्यान देने की है जरुरत: अब्दुल कलाम

किसान खुशहाल होगा तो देश भी खुशहाल होगों देश का विकास कृषि पर निर्भर हैं पूर्व राष्ट्रपति व वैज्ञानिक डॉ एपी जे अब्दुल कलाम ने लघु उद्योगों व कृषि के विकास पर जोर देते हुए कहा कि देश के किसान हर साल 250 मिलियन टन अनाज पैदा करते हैं, अगर देश में कृषि को वैल्यू एडिशन दिया जाये, तो किसानों के साथ-साथ देश भी लाभान्वित होगों

जेडी बिरला इंस्टीट्यूट की तरफ से मंगलवार को सांइस सिटी ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मेलन एनवायरनमेंट एंड इटस इंपैक्ट ऑन सोसाइटी में डॉ कलाम ने भाग लियों उन्होंने कहा कि भारत के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में लाखों लघु उद्योग हैं, जिसमें उन्हें तकनीकी सहायता की जरूरत हैं इसलिए भारत में लघु उद्योगों व कृषि पर अधिक ध्यान देने की जरुरत हैं पूर्व राष्ट्रपति ने देश के छह लाख गांवों में रहनेवाले 70 करोड ग्रामीणों की भलाई व उनकी आर्थिक स्थिति (शेष पृष्ठ २ पर)

भूमि अधिग्रहण विधेयक लोकसभा से पारित

नई दिल्ली: भूमि अधिग्रहण से प्रभावित होने वाले लोगों को उचित मुआवजा मुहैया कराने, भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने और इससे विस्थापित होने वालों के पुनर्वास के लिए विस्तृत उपाय करने के लिए लाए गए ऐतिहासिक भूमि अधिग्रहण एवं पुनर्वास विधेयक को लोकसभा ने गुरुवार को पारित कर दिया। इस बिल के पास होने पर कांग्रेस पार्टी के उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने खुशी जाहिर की।

राज्य सभा से भी मुहर लगने के बाद कानून का रूप लेने वाला (शेष पृष्ठ 2 पर)

एक और हेराफेरी... किसान कर्ज योजना

दिल्ली यूपीए सरकार को घोटालों की मानो आदत सी हो गई हैं तभी तो वित्तमंत्री पी चिदंबरम को २३० करोड रुपये की गडबडी मामूली लग रही हैं२००८ में लागू की गई किसान कर्ज माफी योजना में २३० करोड रुपये की गडबडी होने की बात सामने आई हैं राज्यसभा में प्रश्न काल के दौरान चिदंबरम ने इस मामले में दोषियों के खिलाफ कडी कार्रवाई करने का विश्वास दिलायों और कहा कि इतनी बडी योजना के क्रियान्वयन में ऐसी गडबडियां हो जाती हैं। कैग ने भी इन गडबडियों की ओर ध्यान आकर्षित किया था। चिदंबरम ने कहा कि इस कर्ज माफ़ी योजना में आई गडबडी से करीब तीन करोड से अधिक खतों की जाँच की गई हैं जिसमें २३० करोड रुपये की हेराफेरी नजर आई हैं बैंकों से कार्रवाई करने को कहा गया है। वित्त मंत्री ने कहा कि रिजर्व बैंक और नाबार्ड ने कर्ज माफी से जुडे खातों की बडे पैमाने पर जाँच की है। अभी भी काम जारी है। लगभग १.७६ करोड खातों की जाँच हो चुकी हैं इस योजना में गडबडी करनेवाले दोषियों को बक्शा नही जायेगों पिछले लोकसभा चुनाव से पहले यह योजना लाई गई थीं चिदंबरम ने कहा कि ५२,२६९.८६ करोड रुपये खर्च हुए हैं जिससे करीब ३.७३ करोड किसानों को इसका लाभ हुआ हैं योजना में हुई गडबडी के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इस योजना में केंद्रीय बैंक को ५६,३२२ मामलों में ९८.९७ करोड रुपये की गडबडी मिली है। जबकि नाबार्ड ने दो करोड ८० लाख खातों में ३३१.७० करोड की वित्तीय अनियमितता पाई है।

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

गन्ना किसानों को नहीं मिला 5800 करोड़ रूपये का बकाया भुगतान, थामस

दिल्ली चीनी मिलों द्वारा गन्ना किसानों को बकाया भुगतान करने पर आये हाईकोर्ट के फैसले पर मिलों पर कुछ अंश में ही असर दिख पाया है खाद्य और उपभोक्ता (शेष पृष्ठ २ पर)

भारत के राष्ट्रपती प्रणव मुखर्जी ने किया BGRI का उदघाटन

भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने सोमवार को विज्ञान भवन में पांचवें बी.जी.आर.आई. (बोरलॉग ग्लोबल रस्ट इनीशिएटिव)-२०१३ तकनीकी का यंशाला का उद्घाटन किया। राष्ट्रपति महोदय ने अपने संबोधन (शेष पृष्ठ २ पर)

हरियाणा में पशुओं के लिए बनेंगे आधार कार्ड

चंडीगढ हरियाणा का पशुपालन विभाग पशुओं की सुरक्षा को लेकर एक नई योजना बना रहे हैं जिसमें हर पशु का जल्द ही आधार कार्ड बनेगों जिसमें गाय, भैंस, बकरी, भेड, सूअर आदि जानवरों के लिए यह आधार कार्ड बनाया जायेगों अभी प्रदेश में कुछ ब्लॉक में यह योजना एक प्रयोग के तौर पर शुरू हो रही है। इसमें जिले से झज्जर व बेरी ब्लॉक को शामिल किया गया है। इस आधार कार्ड को बनाने के लिए जानवरों के फोटो खिचेंगे, उनकी नस्ल, रंग, कद-काठी और उम्र आदि का पूरा ब्यौरा तैयार किया जाएगा। साढे तीन लाख

पशुओं का रिकॉर्ड ऑनलाइन किया जाएगा। इस योजना को सफल बनाने के लिए पशुपालन विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जायेगों पशुपालन विभाग (शेष पृष्ठ 2 पर)

आवश्यकता है

प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए संपर्क

022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,
Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

चौपट नगरी अँधा राजा

अर्थ व्यवस्था किसी भी देश की रीड होती है इसका हिलना देश की अर्थ व्यवस्था का हिलना है रुपया और बाजार दोनों पर संकट के बादल मंडरा रहे है डॉलर के मुकाबले रुपया लगातार गिरने का नया रिकॉर्ड बना रहा है सरकार की तमाम कोशिशो के बाद भी रुपये की कमजोरी थमने का नाम नही ले रही है

बढती महगाई,खाद्य बिल को मिली लोकसभा में मंजूरी ओर सीरिया पर अमेरिकी हमले की आशंका ने रूपये को इतने निचले स्तर पर ला खड़ा किया पुरे देश में आग सी लगी हुई है सरकारी खजाने पर खाद्य बिल के चलते लाखो करोडो की सबसीडी बोझ के चलते भारत की आर्थिक हालातो को ओर गंभीर बना दिए है, चिदम्बर ने कहा रूपये को सुधार ने के लिए सरकार ने कई कदम उठाये है,चिदम्बर जी ये बतायिए कि आपके उठाये गए विवेक हीन कदमो ने देश को भयानक आर्थिक आपदा की ओर धकेल दिया है आप ने जब भी आर्थिक स्तिथि पर बयान दिया है ये देश का दुर्भाग्य है कि आपके बयान के बाद डॉलर मजबूत हुआ है ओर रुपया कमजोर . आज सरकार पूरी तरह से अपनी विश्वसनीयता खो चुकी है सरकार अपने खर्च घटाने के बजाय चुनाव में जीतने की जुगत में सरकारी बोझ बडाने वाले निर्णय ले रही है इसी साल सरकार 5.50,000 करोड रूपये कर्ज लेगी सोना अधिक मात्रा में आयात हो रहा है इसी के चलते समस्यायें पैदा हो रही है हमारे देश में प्राकर्तिक संसाधन भरपूर है कोयले का अकूत भंडार होते हुए भी हम कोयला आयात करते है आज भी 5.50,000 करोड की परियोजनाए घोषणायो के बाद पूरा होने का इंतजार कर रही है चिंता का विषय यह है कि हमारे प्रधानमंत्री अर्थशास्त्री है सरकार प्रधानमंत्री का उनकी साफ छवि का हवाला देते हुए उनका बचाव करती रही है वह राजनीतिज्ञ नही है पर अर्थशास्त्री तो है क्या उँडन्हें नही पता कि पिछले वर्षों में उनके उठाये कदम देश को कहाँ लेकर जा रहे है लगातार अर्थ व्यवस्था से होते हुए खिलवाड से वह अनभिज्ञ कैसे हो सकते है देश अर्थशास्त्री को प्रधानमंत्री के रूप में पाकर आर्थिक मोर्चे पर निश्चिन्त था इस टूटे हुए भरोसे पर क्या कहेगे प्रधानमंत्री.....

ऋतु कपिल -
कार्यकारी संपादक

...जंगल है तो मंगल है....बलबीर सिंह

हर व्यक्ति पौधा लगाये हर व्यक्ति पौधा बचाए...ये सिर्फ नारा नहीं हकीक़त है...और इस हकीक़त तो सच कर दिखाया जयपुर जिले के छोटे गाँव ज़िनोई ने...कुछ सालों पहले वीरान और उजाड़ नज़र आने वाला ये गाँव आज शीशम के पेड़ों से हरा भरा नज़र आता है...शीशम के घने जंगलों को पनपाने वालों में वन संरक्षक के साथ साथ गाँव के लोगों की मेहनत भी रंग लाई है...और इन सभी की मेहनत से आज ज़िनोई करोड़पति गाँव कहलाता है...

जयपुर शहर से करीब अट्ठाईस किलोमीटर दूर बसा.... ज़िनोई गाँव...वैसे तो इस छोटे से गाँव में सिर्फ आठ दस मकान ही है जिनमें करीब बीस पच्चीस लोग रहते है..मगर आसपास के क़स्बे और ढाणियों को मिलकर देखें तो करीब दो हज़ार गुर्जर और मीणा समुदाय के लोग यहाँ रहते है...इस गाँव में आने जाने के लिए कोई साधन भी नहीं था..घंटों इंतज़ार के बाद कोई बैल गाडी या खटारा जीप मिलती थी....इस उजाड़ गाँव में कोई भी आना पसंद नहीं करता था..क्योंकि यहाँ ना तो पीने का पानी था और ना ही खेती बाड़ी करने के लिए माकूल ज़मीन...अगर थी तो सिर्फ बंजर भूमि,पत्थर की चट्टानें,तेज़ चलती गरम हवाएं और वन विभाग की एक छोटी सी चौकी .....ज़िनोई के लोग धीरे धीरे दूसरे शहरों और गाँवों की और पलायन की तैयारी कर रहे थे...

कहते है ' समय से पहले और भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ भी नहीं मिलता है.' और यही कहावत चरितार्थ उस समय हुई जब वन विभाग का एक संरक्षक झालावाड से तबादला होकर इस गाँव में आया....तो मानो इस गाँव के दिन ही फिर गए हों...1992 का वो दिन आज भी लोग याद रखते है...जब वन संरक्षक बलबीर सिंह ने अपने क़दम ज़िनोई गाँव में रखे थे...ज़िनोई गाँव ने उस दिन से आजतक पीछे मुडकर नहीं देखा...क्योंकि वन संरक्षक बलबीर सिंह की कुछ कर गुजरने की चाहत लेकर इस गाँव में आया था उसने सोचा की गाँव के लोगों के साथ मिलकर दुनियां को दिखा देंगे की अगर सच्ची मेहनत और हौसला आपके पास है तो आप बड़े से बड़ा काम भी आसानी से कर सकते है...

बलबीर सिंह को गाँव के लोगों को समझाने में बहुत दिक्कतें भी आई...कोई बलबीर की बातों को सुनने और मानने को भी तैयार नहीं था...और फिर एक दिन बलबीर ने गाँव की पंचायत बुलाकर लोगों को समझाया..कि अगर हम यहाँ पर मेहनत नहीं करेंगे खेती बाड़ी नहीं करेंगे तो यहाँ पर बाहर की बड़ी बड़ी कम्पनियाँ आ जाएँगी..तो यहाँ हमारे खेतों हमारे घरों को सरकारी माध्यम से नाम मात्र रुपयों में खरीद लेंगे तो हम कहा जायेंगे..हमारे वन नहीं बचेंगे तो हम क्या करेंगे...सरकार से बात करके हम यहाँ पर सुविधाएँ जुटाएंगे...और हमारे गाँव ज़िनोई को देश में एक अलग स्थान दिलाएंगे..बलबीर सिंह कि इन बातों ने गाँव के लोगों में जाग्रति पैदा कर दी..अब गाँव के लोगों में एक नया जोश और ज़ज्बा पैदा हो गया था...और इन्ही सब के चलते गाँव के लोगों ने वन विभाग के साथ मिलकर 'वन सुरक्षा समिति' का निर्माण किया...और वन विभाग के साथ प्रस्ताव पास किया..कि गाँव के विकास में वन विभाग उन्हें खेती के लिए सुविधा और साधन जुटाकर गाँव का और गांववासियों का विकास करेगी...और इस समिति का सर्वसम्मति से एक अध्यक्ष चुना गया...जो आज भी इस समित का सञ्चालन कर रहा है..... और अगले दिन का सूरज अपनी सुबह कि किरणों के साथ ज़िनोई गाँव में वो खुशियाँ,वो जुनून लाया जो आज भी इनके चहरे में देखने को मिलता है..वन संरक्षक बलबीर सिंह और समिति के अथक प्रयासों ने सरकार से गुर्जर और मीणा समाज को पांच सौ हैक्टेयर भूमि खेतों के लिए दिलवाकर फायदा दिलवाया...और फिर धीरे धीरे गाँव के लोग जुडते गए और कारवां बनता गया...समिति और बलबीर सिंह ने शीशम के पौधे लगाने की शुरुआत की क्योंकि बलबीर सिंह ये जानता था..की पूरे राजस्थान के रेगिस्तान में शीशम का उत्पादन बहुत कम मात्र में होता है...और शीशम का पूरा पेड़ तैयार होने में करीब 20 से 25 वर्ष का समय लगता है..लेकिन इस पेड़ से गिरने वाली सूखी लकड़ियां और ज़मीन का जल स्तर काफी मात्रा में ऊपर आने में सहायक होता है...साथ ही खेती के लिए भी आसपास की ज़मीन भी उपजाऊ बन जाती है.. तथा गाँव के जानवरों और मवेशियों के लिए भी चारे की कमी नहीं होगी....इसी सोच के साथ शुरु हुआ शीशम के बीज और पौधों का वृक्षा रोपड़... ज़िनोई गाँव में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति बचा हो जिसने यहाँ वृक्ष नहीं लगाया हो...बच्चा बुढा जवान सभी ने शीशम और अन्य पौधों के वृक्ष इस गाँव में लगाये है..और अब भी अपना योगदान लगातार दे रहे है... इसी की बदौलत आज ज़िनोई में करीब पांच लाख पौधे लगे हुए है...जिसमें करीब आधे शीशम के हरे भरे पौधे लगे हुए है...!

जल है तो कल है...जंगल है तो मंगल है....इस नारे को ध्यान में रखते हुए... वन संरक्षक बलबीर सिंह और ज़िनोई गाँव के निवासियों ने मिलकर इस गाँव को एक नहीं दिशा दी है...जो काबिले तारीफ़ है....लाखों पौधे और घास लगाकर...इस गाँव में जलस्तर को उंचाईयां दी है...शीशम के घने और लम्बे पेड़ों ने बारिश को आमंत्रण दिया है....जिससे बारिश भी ज्यादा होने लगी है.... यहाँ पानी का स्तर बहुत नीचा था... अब जल स्तर में भी काफी सुधार हुआ है...आखिर आठ से दस साल के लम्बे इंतज़ार के बाद सरकार की नींद खुली...और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत भी पहुंचे ज़िनोई गाँव.....यहाँ की आबो-हवा और पर्यावरण संरक्षण के काम को देखकर बहुत खुश हुए...और यहाँ करवा दिया २००१ में राज्य स्तरीय वन महोत्सव....

राज्य स्तरीय वन महोत्सव के बाद लोगों को पता चला कि एक गाँव ऐसा है जहाँ सारे लोग पर्यावरण को बचाने में कितने जागरूक है... कहते है..अच्छी बातें सिर्फ किताबों में ही अच्छी लगती है...और एक वार फिर लोग इस गाँव को भूलने लगे... मगर बलबीर सिंह और गाँव के निवासियों में भी हार नहीं मानी ...और फिर सारे लोग पहुंच गए राज्य के मुखिया अशोक गहलोत ज़िनोई गाँव के लोगों की मेहनत और लगन को देखकर ज़िनोई को तोहफे के रूप में पानी की टंकी...वेटेनरी हॉस्पिटल और 68 लाख रुपये की सडक बनवाने के आदेश दे दिए... दूर दराज के लोग शीशम के घने पेड़ों को देखने और अच्छी स्वछ हवा के लिए यहाँ भ्रमण करने आते है...साथ ही जलोई और इसके आस पास की ढाणियों में मवेशियों को चराने के लिए मुफ्त में लूम..पातडी..और घास की इजाज़त वन विभाग के द्वारा दी हुई है..... खाना बनाने और घर में उपयोग के लिए वन विभाग की और से लकड़ियाँ भी नि:शुल्क दी जाती है...यही नहीं ज़िनोई या उसके आस पास के गाँव में किसी की मृत्यु हो जाती है तो उसके अंतिम संस्कार के लिए भी यहीं से ही मुफ्त में लकड़ियाँ दी जाती है...

राज्यसरकार ने 2010 में फिर एक वार यहाँ राज्यस्तरीय वन महोत्सव का आयोजन करवाया था... जो काफी सफल रहा..इस वार.जापान सरकार का प्रतिनिधि मंडल भी साथ आया था...जिसने इस गाँव की पर्यावरण व्यवस्था को देखते हुए राजस्थान सरकार को पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने के उद्देश्य से साढ़े बारह सौ करोड़ रुपये की मंजूरी दी है... पूर्व में भी राजस्थान सरकार के बजट को जापान के प्रतिनिधि मंडल ने निरस्त कर दिया था...क्योंकि पर्यावरण को देखते हुए सरकार ने कोई संतोष जनक काम नहीं किया था..मगर अब ज़िनोई के जलवे के कारण सरकार को पर्यावरण के क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए करोडों रुपये मिले है.. ज़िनोई की ये कामयाबी की दास्ताँ..वन संरक्षण में जुटी संस्थाओ,,,,सरकारी तंत्र के लिए प्रेरणा श्रोत ही नहीं... बल्कि उन लाखों लोगों के लिए एक सीख भी है जो प्रकृति और पेड़ों के रिश्तों को वह सम्मान नहीं दे पा रहे है जिसका जिक्र हमारे वेदों और पुराणो में मिलता है... ये शीशम के एक लाख से ज्यादा पेड़.... एक छोटे से वृक्षारोपण से हुए आगाज़ का वह हिस्सा है.....जो ज़िनोई को तो आने वाले समय में अरबपति बनाएगा ही साथ में ग्रामीणो को भी समृद्ध कर देगा...यही है ज़िनोई का जलवा...

दीपक गोस्वामी

जूझारू व्यक्तित्व घनश्याम तिवारी

राजस्थान की राजनीति में 50 वर्षों का लम्बा सफर। कमाल की बात ये कि इस सफर में कई मुकाम भी आए। लेकिन वे कहीं ठहरे नहीं, रुके नहीं, विश्राम नहीं किया। इरादा हमेशा यही रहा- मंजिलें अभी और भी हैं। इसलिए चलते रहे-चलते रहे। आज भी सफर जारी है। आज भी वे उद्वेलित होकर आह्वान करते हैं-उठो, सत्य के लिए, स्वाभिमान के लिए, राजनीतिक शुचिता के लिए, राजस्थान की रक्षा के लिए।

सीकर जिले के छोटे से कस्बे खुड में उनका जन्म हुआ यौवन की दहलीज पर आने से पहले ही घनश्याम में राष्ट्रवाद और देशप्रेम जैसे गुणों का समावेश हो गया। 15 साल की छोटी उम्र में ही तिवाड़ी राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय हो गए थे। स्कूल से आरंभ हुआ राजनीतिक सफर कॉलेज शिक्षा और क्षेत्रीय राजनीतिक मंच तक पहुंच चुका था। समय की धारा उस समय बदली जब आपातकाल लगा। 1975 का वह माहौल जागरूक देशप्रेमियों के मन में परिवर्तन की हिलोरें उठाने लगा। युवा घनश्याम ने जमकर विरोध प्रकट किया। उन्हें पुलिस की यातनाएं झेलनी पड़ीं, जेल जाना पड़ा, भूमिगत रह कर राजनीतिक सक्रियता जारी रखी। युवा घनश्याम अब सीकर राजनीति तक सीमित नहीं रह गए थे। वे प्रादेशिक स्तर पर लगातार उठ रहे थे। युवाओं को नेतृत्व और प्रेरणा दे रहे थे। राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी का पहला अधिवेशन आयोजित करने वाले प्रमुख नेता घनश्याम तिवाड़ी ही थे। प्रभाव और व्यवहार इतना घनिष्ठ कि अधिवेशन के आयोजन की बाधाओं को दूर करने के लिए कांग्रेसी मुख्यमंत्री श्री हरदेव जोशी ने सीकर में दो दिन का सरकारी अवकाश घोषित किया। ताकि अधिवेशन में आए दस हजार से अधिक लोगों के ठहरने के लिए सरकारी स्कूलों में व्यवस्थाएं की जा सकें।

सीकर से दो बार विधायक रहने के बाद तिवाड़ी ने जयपुर की ओर रुख किया। सांगानेर विधानसभा क्षेत्र से उन्होंने चुनाव लड़ा और एक बेहतर विधायक के तौर पर आज भी कार्य कर रहे हैं। घनश्याम तिवाड़ी छात्र जीवन से ही राजनीतिक रूप से सक्रिय रहे। देश और समाज के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा उन्हें अपने परिवार से मिली। तिवाड़ी ने श्री कल्याण संस्कृत महाविद्यालय से ही स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने जयपुर से एलएलबी की डिग्री हासिल की और 1970-71 में राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ एपेक्स बॉडी के सदस्य रहे। साथ ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संयोजक एवं उपाध्यक्ष तथा राजस्थान युवा संघ व अखिल भारतीय संयोजक मंडल के अध्यक्ष भी रहे। विद्यालय जीवन से महाविद्यालय जीवन तक तिवाड़ी ने कई महत्वपूर्ण दायित्वों एवं पदों का निर्वहन किया। देश में 1975 के दौरान लगे आपातकाल ने तिवाड़ी को पूरी तरह राजनीतिक रण में उतार दिया।

छात्र जीवन में वह महामंत्री, श्री कल्याण कॉलेज, सीकर सदस्य, अपेक्स बॉडी, राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ संयोजक एवं उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अध्यक्ष, राजस्थान युवा संघ एवं अखिल भारतीय संयोजक मंडल रहें

विधानसभा में जनप्रतिनिधि-विधायक के रूप में 1980 से 1985 तक प्रथम बार विधायक, विधानसभा क्षेत्र सीकर,1985 से 1989 तक पुन: विधानसभा क्षेत्र सीकर से विधायक,1993 से 1998 तक विधानसभा क्षेत्र, चौमूं से विधायक,2003 से 2008 तक विधानसभा क्षेत्र, सांगानेर से विधायक,2008 से वर्तमान में विधानसभा क्षेत्र, सांगानेर से विधायक रहें

02 जुलाई, 1998 से ३० नवम्बर, 1998 तक श्री भैरोंसिंह शेखावत के नेतृत्व वाली सरकार में ऊर्जा मंत्री08 दिसम्बर, 2003 से 2007 तक श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व वाली सरकार में प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, विधि एवं न्याय, संसदीय मामले, भाषाई अल्पसंख्यक, पुस्तकालय एवं भाषा मंत्री तथा दिसम्बर, 2007 से वर्ष 2008 तक खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, विधि एवं न्याय मंत्री रहें इसी की साथ1981 में भाजपा, जिला सीकर के ६ वर्ष तक अध्यक्ष,1991 में भाजपा, राजस्थान प्रदेश के महामंत्री,1989 से 2003 तक भाजपा, राजस्थान के प्रदेश उपाध्यक्ष,1992 से 1994 तक भाजपा राष्ट्रीय परिषद के सदस्य,1992 से 1994 तक भाजपा, राजस्थान के प्रवक्ता, 1992 से 1994 तक चुनाव समिति, भाजपा, राजस्थान के सदस्य,2000 से राष्ट्रीय कार्यकारिणी, भाजपा के सदस्य,2008 में चुनाव घोषणा-पत्र समिति, भाजपा, राजस्थान के अध्यक्ष रहे साथ हीह्वह्वअध्यक्ष, केंद्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद, माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की उप-समिति सदस्य, डिलिमिटेशन कमीशन-2004, भारत सरकार, परिसीमन आयोग भी रहें

शैक्षिक उपलब्धियों पर राजस्थान को मिला कन्फ्यूशियस पुरस्कार :

दो बार मिला राष्ट्रीय सत्येन मैत्रेय पुरस्कार

यूरोप में भारतीय संस्कृति का शंखनाद :

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की अध्यक्षता की :

आज भी वह अपने दर्शन के साथ चल रहे है , 'उठो, सत्य के लिए, स्वाभिमान के लिए, राजनीतिक शुचिता के लिए, राजस्थान की रक्षा के लिए।'

-दीपक गोस्वामी

व्यक्तित्व

भूमि अधिग्रहण...

पुनरुद्धार एवं पुनर्वास विधेयक २०१२ अब भूमि अधिग्रहण में स्वच्छ मुआवजा एवं पारदर्शिता का अधिकार के नाम से जाना जाएगा और यह ब्रिटिश कालीन १८९४ के करीब १२० वर्ष पुराने कानून की जगह लेगा।

लोकसभा में विधेयक पर हुए मतदान के दौरान उपस्थित २३५ सदस्यों में से २१६ सदस्यों ने पक्ष में और १९ ने इसके विरोध में मतदान किया।

जहां कांग्रेस ने इसे ऐतिहासिक कदम करार दिया वहीं अधिकांश दलों ने इसका समर्थन तो किया, लेकिन उर्वर भूमि का औद्योगिक विकास के लिए अधिग्रहण नहीं करने का तर्क रखा। पार्टियों ने इसकी जगह बेकार या बंजर जमीन का इस्तेमाल करने की सलाह दी।

भारत में लघु...

में सुधार के लिए पुरा (प्रोवाइडिंग ऑफ अर्बन अमेनिटीज टू रुरल एरियाज) स्कीम को बेहतर तरीके से लागू करने की बात कहीं

डॉ कलाम ने इंस्टीट्यूट के छात्रों को कहा कि ऊर्जा बचत को ऊर्जा के पांचवें स्रोत के रूप में माना जाना चाहिएं उन्होंने कहा कि ऊर्जा की बचत करने सेही ऊर्जा उत्पत्ति होगीं इसके लिए सामाजिक जागरूकता, उद्योग व घरों को हरित बनाने की जरूरत हैं सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा व बारिश के पानी का इस्तेमाल, गंदे पानी का रिसाइक्लिंग कराना पुन: प्रयोग में लाये जाने से भी ऊर्जा की बचत की जा सकती हैं देश में हो रहे ऊर्जा खपत की दर को भी कलाम ने कम करने की सलाह दीं

गन्ना किसानों को नहीं

मामलों के मंत्री के वी थामस ने लोकसभा में एक सवाल के लिखित जवाब में यह जानकारी देते हुए बताया कि 2012-13 के कारोबारी वर्ष (अक्तूबर-सितंबर) में जून तक देय गन्ना मूल्य 58,806.97 है जिसमें से चीनी मिलों ने 52,985.94 करोड रूपये का भुगतान किया हैं अभीतक चीनी मिलों पर 5800करोड रूपये से अधिक गन्ना किसानों का बकाया हैं खाद्य और उपभोक्ता मामलों के मंत्री थामस ने बताया कि प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश में चीनी मिलों पर गन्ना उत्पादक किसानों का सर्वाधिक 4234 करोड रूपये का बकाया हैं जबकि महाराष्ट्र में चीनी मिलों पर गन्ना उत्पादक किसानों की बकाया राशि लगभग शून्य हैं थामसने बताया कि गन्ना नियंत्रण आदेश 1966 के मुताबिक आपूर्ति के १४ दिनों के भीतर गन्ना मूल्य का भुगतान करना होता है, जिसके न होने पर देय राशि पर 15 फीसदी प्रति वर्ष की दर से ब्याज का भुगतान करना होता हैं दुनिया में चीनी उत्पादन में भारत दुसरे स्थान परहैं अनुमान लगाया जा रहा है कि विपणन वर्ष 2012-13 में पच्चीस लाख टन का उत्पादन होगा, जबकि घरेलु मांग बाईस लाख टन हैं

हरियाणा में पशुओं...

के महानिदेशक द्वारा मिली जानकारी के अनुसार इस योजना का काम अगले महीने से शुरू होगों साथ ही आधार कार्ड बनने से पशु ही नहीं पशुपालकों को भी लाभ होगा।

योजना का मुख्य उद्देश्य है पशुओंकी पहचान, उनकीसुरक्षा और उन्हें स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ दिलाना। योजना के जरिए प्रदेश मेंहत्म हो रही पशुओं की प्रजातियों, अनुवांशिक प्रभावों,उनके बदलते खानपान और बीमारियों पर ध्यान रखना

भारत के राष्ट्रपती प्रणव...

में भारत को अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. नॉरमन ई. बोरलॉग के योगदान और उनकी सेवाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि डॉ. बोरलॉग ने दक्षिण एशिया क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाने में काफी सहयोग किया। आज यह विश्व का सबसे ज्यादा गेहूं उत्पादन करने वाला क्षेत्र है। उच्च उत्पादक प्रजाति के गेहूं के विकास और गेहूं के तना में लगने वाले रतुआ रोग के खिलाफ उनके अभियान के लिए उन्हें 1970 में नोबल शांति पुरस्कार दिया गया। उन्होंने डॉ. बोरलॉग द्वारा प्रारंभ किए गए काम को आगे बढ़ाये जाने की सराहना की। राष्ट्रपति महोदय ने कहा कि गेहूं का उत्पादन बढ़ाने और इसमें लगने वाले रोगों पर नियंत्रण पाने के लिए जिस तरह से निरंतर शोध और विकास कार्य हो रहे हैं, उसके प्रेरणास्रोत डॉ. बोरलॉग ही हैं। वर्ष 1965 से अब तक देश के छह सबसे ज्यादा गेहूं उत्पादक क्षेत्रों में वाणिज्यिक खेती के लिए गेहूं की 403 प्रजातियों का विकास किया जा चुका है। इन प्रजातियों को उत्पादन क्षमता, पौष्टिक तत्वों की उपलब्धता और रोग प्रतिरोधात्मकता के उच्च मापदंडों पर कड़े मूल्यांकन के बाद ही किसानों तक पहुंचाया गया है। आईसीएआर के विभिन्न संस्थानों के शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के बाद किसानों को गेहूं की नई उन्नत किस्मों के साथ उत्पादन बढ़ाने की तकनीकी जानकारियां भी उपलब्ध कराई जा चुकी हैं। इसमें राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और गेहूं अनुसंधान निदेशालय का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। श्री शरद पवार, केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार ने अपने संबोधन में भारतीय और वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए इस तकनीकी कार्यशाला के महत्व को बताया। हरित क्रान्ति से पहले अनाज की भीषण कमी को याद करते हुए उन्होंने कहा कि डॉ. बोरलॉग, डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन और अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने अपने शोधों और अथक प्रयासों से आज गेहूं उत्पादन को एक नयी ऊंचाई तक पहुंचा दिया है। इस मौके पर बी.जी.आर.आई की अध्यक्ष और डॉ. बोरलॉग की पुत्री सुश्री जेनी बोरलॉग ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी को सम्मानित किया। सुश्री जेनी ने बचपन में अपने पिता के साथ की गई भारत यात्राओं के अनुभव साझा किये। उन्होंने कहा कि डॉ. बोरलॉग खेती में जैव प्रौद्योगिकी के प्रयोग के मजबूत पक्षधर थे। उन्हें भरोसा था कि इससे दुनिया से, खासकर विकासशील देशों से, भुखमरी को पूरी तरह से समाप्त किया जा सकता है।

डॉ. रॉनी कॉफमैन, उपाध्यक्ष, बी.जी.आर.आई. और अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम, कार्नेल विश्वविद्यालय ने गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिनिधियों और अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने भारत और उपमहाद्वीप में गेहूं में लगने वाले रतुआ रोग के संबंध में बी.जी.आर.आई. के उद्देश्यों, अनुसंधान पहल और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. ने इस मौके पर कहा कि डॉ. बोरलॉग ऐसे शोधकर्ता थे जिन्होंने कभी खुद को भौगोलिक सीमाओं में नहीं बांधा। उन्होंने भारत में गेहूं उत्पादन के इतिहास की जानकारी दी और उसके बाद जो क्रान्ति आई उससे भारत में कुल गेहूं उत्पादन ९५ लाख टन की रिकॉर्ड ऊंचाई तक पहुंच गया। उन्होंने कहा कि बी.जी.आर.आई. ने भारत में गेहूं शोध कार्यक्रम को मजबूती प्रदान की है, खासकर रतुआ से खतरे को लेकर। डॉ. अय्यप्पन ने आशा व्यक्त की कि इस तकनीकी कार्यशाला में होने वाले विचार-विमर्श से गेहूं उत्पादन और इसकी गुणवत्ता को और बढ़ाने के लिए सशक्त रोडमैप विकसित हो सकेगा।

श्री आशीष बहुगुणा, सचिव, कृषि मंत्रालय ने आशा व्यक्त की कि गेहूं का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए भारत आधुनिक प्रौद्योगिकी में अपनी क्षमता का आगे भी विकास करेगा। उन्होंने कहा कि भारतीय वैज्ञानिकों को देश की पोषण सुरक्षा को बढ़ाने के लिए अपने शोध कार्यक्रमों को अधिक सशक्त बनाना चाहिए। डॉ. स्वप्न कुमार दत्ता, उप महानिदेशक, फसल विज्ञान, भा.कृ.अनु.प. ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

यह कार्यशाला डॉ. नॉरमन ई. बोरलॉग की 1963 में पहली भारत यात्रा के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य पर आयोजित की जा रही है। इसमें ५० देशों से आए करीब ५०० प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। यह चार दिवसीय (19-22 अगस्त, 2013) कार्यशाला संयुक्त रूप से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और बीजीआरआई की ओर से आयोजित की गई है। बीजीआरआई की स्थापना वर्ष 2005 में डॉ. बोरलॉग ने की थी। उन्होंने आगाह किया था कि रतुआ कभी भी खत्म नहीं होता है। बीजीआरआई के माध्यम से ही उन्होंने वैश्विक खाद्य सुरक्षा को रतुआ से पैदा हुए खतरे से आगाह करने के लिए एक अभियान की शुरुआत की थी।

बायोगैस प्लांट लगाने पर मिलेगा अनुदान

पानीपत` हरियाणा का कृषि विभाग किसानों को बायोगैस के फायदे बता रहा हैं जिससे प्रेरित होकर किसान बायोगैस प्लांट लगायें इसे लगवाने के दो फायदे है, एक इसे लगाने से खाना फ्री में बन जायेगा और दूसरा प्लांट से निकलनेवाली गोबर खेतों में उत्तम खाद के लिए उपयोग में लाई जाएगीं इसे किसानों को बताने के लिए कृषि विभाग ने ब्लॉक स्तर पर टीमें बनाई हैं कृषि विभाग ने चालू वित्तीय वर्ष के दौरान जिले में 90 बायोगैस प्लांट लगाने का लक्ष्य रख रखा है। विभाग द्वारा चुने गए अधिकारी किसानों को बायोगैस प्लांट के फायदे बताएँगे साथ ही गांव-गांव में जाकर किसानों को बायोगैस प्लांट लगवाने के लिए प्रेरित करने करेंगें विशेषज्ञों का कहना है कि बायोगैस प्लांट लगाने से किसानों को कई फायदे होंगे। एकतो खाना बनाने के लिए मुफ्त में गैस मिलेगी, दूसरे बायोगैस प्लांट से निकलने वाले गोबर से उत्तम किस्म की खाद बनेगी। इस खाद को खेत में डालने से कम खरपतवार निर्माण होती हैं।

पशुपालन खेती के लिए उत्तम साधन हैं यह एक-दूसरे के पूरक हैं आज के किसान पशु पालन करना पसंद नही करतें लेकिन गोबर के बगैर बायोगैस प्लांट चल ही नहीं सकतों इसलिए कृषि विभाग बायोगैस प्लांट लगाने पर अनुदान दे रहा है। विभाग से प्राप्त जानकारी के मुताबिक एक बायोगैस प्लांट पर आठ हजार रुपये की सब्सिडी दी जा रही हैं सुरक्षा की नजर से देखा जाये तो बायोगैस प्लांट से निकलने वाली गैस हवा में मिलकर निष्क्रिय हो जाती है। जिससे किसी भी तरह का धोखा नही हैं

नाबार्ड ने हरियाणा को मंजूर किया 238.65 करोड़ रुपये का ऋण

चंडीगढ़` हरियाणा में ग्रामीण विकास के लिए नाबार्ड ने 238.65 करोड़ रुपये का ऋण मंजूर किया हैं जिसके अंतर्गत राज्य में 21 सड़के और 14 पेयजल परियोजनाओं का विकास किया जायेगों नाबार्ड (हरियाणा) के मुख्य महाप्रबंधक डी.वी. देशपांडे ने यह जानकारी दी राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने यह ऋण ग्रामीण ढांचागत विकास कोष (आरआईडीएफ) योजना के तहत मंजूर किया हैं 221.53 करोड़ रुपये राशी से फरीदाबाद, फतेहाबाद, झज्जर, जींद, कैथल, रेवाड़ी, रोहतक और यमुना नगर सहित 8 जिलों में ग्रामीण सड़कों को चौड़ा और मजबूत किया जायेगों इन सड़कों के निर्माण से सभी मौसम में दूरदराज के गांवों, विपणन केन्द्रों, कई शैक्षिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थानों में संपर्क बना रहेगों तथा हिसार जिले के 21 गांवों के गाववासियों को 17.11 करोड़ रुपये की ग्रामीण पेयजल आपूर्ति योजनाओं के तहत जलपूर्ति की जाएगीं

NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT

पुलिस आफिसर के जीवन में आलू की खेती ने किया कमाल

बनासकांठा आलू की खेती कर पुलिस आफिसर ने लोगों को कृषि में नया पाठ पढाया हैं गुजरात में पुलिस ऑफिसर पार्थी चौधरी ने आलू की खेती कर किसानों के लिए आर्थिक सबलता का मानो मंत्र दिया हों

एंटी करप्शन ब्यूरो के पुलिस ऑफिसर पार्थी चौधरी ने गुजरात के पालनपुर तालुका में मार्च 2010 में अपनी नौ हेक्टेयर जमीन में औसतन 87 टन प्रति हेक्टेयर आलू उगाए थे। आलू की खेती उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों के परिक्षण में कराई जिससे उन्हें घाटे का सामना न करना पड़ों पार्थी चौधरी के मुताबिक आलू की ये उपज पूरे देश में सबसे ज्यादा थी। गौर करने वाली बात ये है कि गुजरात में औसत उपज जो देश में सबसे अच्छी मानी जाती है, वो भी चौधरी की उपज के मुकाबले एक तिहाई है।

नर्मदा में बाढ़, मध्य प्रदेश का जनजीवन हुआ प्रभावित

भोपाल । मध्य प्रदेश में बारिश कहर बनकर बरस रही हैं भयंकर बारिश से नर्मदा सहित कई नदियों में बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हुई हैं होशंगाबाद में किनारे बसे नगरों और गांवों में बाढ़ की स्थिति और गंभीर हो गई है। होशंगाबाद के प्रसिद्ध सेठानी घाट पर नर्मदा नदी की जलस्तर 980 फीट से उपर पहुंचा गया है। मूसलाधार बारिश से नर्मदा सहित कई नदियों में आई बाढ़ से मरने वालों की संख्या ५९ तक पहुच गई हैं नर्मदा का पानी नगर के निचली बस्तियो में भरने के साथ ही अनेक गांवों में भी चला गया है। प्रशासन ने सैकड़ों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया है। जिले में यातायात प्रभावित हुई हैं प्रशासनिक अमला स्थिति पर नजर रखे हुए हैं और मोटर बोर्ड के अलावा गोताखोरों की तैनाती की गई है।

‘कृषि पत्रकारिता’ के लिए नसीब सैनी को किया पुरस्कार से सम्मानित

दिल्ली । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के ८५ वें स्थापना दिवस पर आयोजित भव्य समारोह में कृषि पत्रकारिता में कैथल के पत्रकार नसीब सैनी को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गयों केंद्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण एवं उद्योग मंत्री शरद पवार की उपस्थिति में राज्यमंत्री तारिक अनवर ने राष्ट्रीय दैनिक में कार्यरत नसीब सैनी को प्रशस्ति पत्र व एक लाख रूपये की राशि का चैक प्रदान किया। यह कार्यक्रम दिल्ली के एपी शिंदे सिंपोजियम हाल में आयोजित किया गया थों पुरस्कार वितरण समारोह में कृषि शोध, अध्ययन, लेखन के साथ-साथ देश के उत्कृष्ट किसानों को भी राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गयों गौरतलब है कि नसीब सैनी ने कृषि, किसानों की समस्या आदि मुद्दों पर अपनी लेखनी द्वारा आवाज उठाईं साथ ही कृषि क्षेत्र में हो रहे नवीनतम अनुसंधान व अपनाई जा रही नई तकनीकों को भी किसानों तक पहुचाने में योगदान दियों जिससे किसानों को काफी लाभ हुआ। राष्ट्रपति प्रणव मुख़र्जी ने ICAR के स्थापना दिवस पर कृषि क्षेत्र में हो रही प्रगति के लिए सबको शुभकामनाएं दीं इस अवसर पर कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री डा. चरणदास महंत के अलावा देश के सभी कृषि संस्थानों को निदेशक, कुलपति, आईसीएआर के सदस्य कुलदीप धारीवाल एवं देश भर से आए कृषि विशेषज्ञों सहित प्रगतिशील किसान मौजूद थे।

पंजाब में ‘प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना’ के तहत खर्च होंगे 100 करोड़ रुपये

लुधियाना` प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना गावों को जोड़ने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री मनीष तिवारी ने लुधियाना जिले में एयाली से झम्मट तक जाने वाली सड़क व राष्ट्रीय राजमार्ग 95 से गांव बैंस तक जाने वाली सड़क इन दो महत्वपूर्ण सड़कों की नींव रखीं इस सड़क निर्माण में एयाली-झम्मट के लिए 82 लाख रुपए व राष्ट्रीय राजमार्ग-बैंस सड़क के लिए करीबन 98.5 लाख रुपए की लागत लगेगीं मनीष तिवारी ने कहा कि केन्द्र सरकार ने लुधियाना जिले में /प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना/ के तहत अनेक संपर्क सड़कों को बिछाने के लिए अब तक कोई 100 करोड़ रुपए की राशि जारी की है। जिसके अनुसार कई जगहों पर काम पूरा हो चूका है तो कहीं पर अभी भी काम चल रहा हैं सडक निर्माण से नागरिकों के लिए आना-जाना, संपर्क करना, माल की ढुलाई करना आदि कार्य आसान हो जाते हैं साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र सरकार हर साल पंजाब सरकार को विभिन्न योजनाओं के तहत 1000 करोड़ रुपए देती है। परंतु उसको योग्य तरीके से उपयोग में नहीं लाया जातों

‘वैश्विक कृषि सम्मेलन’ गांधीनगर में ...नरेन्द्र मोदी

गांधीनगर देश के प्रत्येक राज्य के प्रत्येक जिले के किसानों को कृषिक्षेत्र में योगदान देने के सन्दर्भ में गुजरात सरकार पुरस्कृत करेगीं अगले माह ९ सितंबर से गांधीनगर में होनेवाले ’वैश्विक कृषि सम्मेलन’ में देश भर के करीब 5,000 किसान भाग लेंगें जिसमें करीब 3,000 से भी अधिक किसान प्रदेश के बाहर के होंगें इसमें पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों के चुनिंदा किसान भी गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मुलाकात व कृषि पर उनसे सीधी बात करेंगें

गुजरात के कृषि एवं सहकारिता के प्रधान सचिव राजकुमार ने बताया, सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण पहलु उसका पुरस्कार समारोह होगा। इसमें देश के सभी 671 जिलों के एक-एक किसान को खाद्य सुरक्षा हासिल करने में उनके योगदान के लिए पुरस्कृत किया जायेगों पुरस्कार के तौर पर नकदी और प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।

यह कृषि सम्मिट तीन दिन तक चलेगों भाजपा किसान मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव अनिल शर्मा ने बताया कि सम्मेलन में उन्हीं किसानों का प्रतिनिधित्व है जो राज्य सरकार या गैर सरकारी संगठनों की ओर से बेहतर उत्पादन प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत हो चुके हैं। इसके लिए गुजरात सरकार ने बंगाल सहित सभी राज्य सरकारों को पत्र लिखा था। शर्मा ने कहा कि किसानों के किराए और तीन दिन के रहने खाने-पीने के खर्च का गुजरात सरकार वहन करेगी। उन्हें गुजरात की आधुनिक कृषि तकनीक से रूबरू होने का मौका तो मिलेगा ही मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने और उनसे बात करने का मौका भी दिया जाएगा।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा होगा किसान मेले का आयोजन

हिसार हर साल की तरह इस वर्ष भी हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (HAU) द्वारा किसान मेले का आयोजन किया जा रहा हैं इस मेले में किसानों को कृषि से संबंधित आधुनिक तकनीकों से अवगत किया जाता हैं 2013 मे11 सितम्बर से यह किसान मेला आरम्भ होगों इस दो दिवसीय किसान मेले को लेकर किसानों तथा प्राइवेट कंपनियों में भारी उत्साह है। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस मेले में किसानों को कृषि व पशुपालन की आधुनिक व लाभकारी तकनीकों की जानकारी दी जाती हैं इस प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों द्वारा कृषि, पशुपालन व ग्रामीण परिवेश विकास के लिए निर्माण की गई नई तकनीक व उत्पाद प्रदर्शित किए जाते है। प्राइवेट तथा बहुराष्ट्रीय कंपनिया भी इस प्रदर्शनी में भाग लेती हैं इस मेले में भाग लेने के लिए प्राइवेट कंपनियों को पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर आवंटन किया जा रहा हैं

क्या क्या न किया मंत्री पद के लिए ... योगेंद्र साहू

रांची। मंत्री कैसे बना जाता है, झारखंड में कांग्रेस के नेता ने सोमवार को बड़े बेलाग तरीके से इसका ’राज़’ खोला। झारखंड सरकार में हाल ही में मंत्री बने कांग्रेस नेता योगेंद्र साहू ने एक कार्यक्रम में कहा कि मंत्री बनने के लिए उन्होंने सोनिया, राहुल गांधी से लेकर अहमद पटेल तक के चक्कर काटे। यही नहीं उन्हें दुर्गा पाठ करने से लेकर जूते तक सिलने पड़े। राज्य में कृषि मंत्री बनाए गए साहू ने कहा कि मंत्री बनने के लिए उन्होंने 15 दिनों तक दौड़ भाग की। जब जाकर वह दूसरों को पछाड़कर इस पद तक पहुंच पाए। साहू ने कहा, ’सोनिया गांधी से लेकर राहुल गांधी तक मैंने क्या किया विस्तार से नहीं बता सकता। यह हम ही जानते हैं कि हमने क्या किया। जूता सीने से लेकर चंडी पाठ तक करना पड़ता है राजनीति में। मैं एक किसान का बेटा हूं.. हमको लगता है इसीलिए हमको कृषि मंत्री का पद दे दिया गया।’ साहू ने यह भी कहा कि उनका नाम मंत्री बनाए जाने वाले लोगों की सूची में नहीं था। लेकिन, काफी दौड़भाग करने के बाद वह मंत्री बन गए। यही नहीं उन्होंने अभी 2-3 और मंत्रालयों पर कब्जा करने की बात भी कह डाली। साहू ने कहा, ’अभी हमको 2-3 मंत्रालयों पर और कब्जा करना है। हम इसका प्रयास कर रहे हैं। हम उनमे से नहीं हैं तो बैठे रहकर भीख मांगेंगे। हम लूटना जानते हैं छीनना जानते हैं। साहू ने ये बातें पार्टी कार्यकर्ताओं के एक कार्यक्रम में कहीं।"

सौर संचालन ड्रायर ने दिलाई विश्व ख्याति

एक छोटी सी सोच भी आपको विश्व स्तर पर ख्याति दिला सकती हैंफिर चाहे वह कोई भी क्षेत्र हो बस आपके हौसले बुलंद होने चाहिऐं कुछ ऐसा ही हुआ मुंबई के ‘इन्स्टिटय़ूट ऑफ केमिकल टेक्नोलॉजी’ से जुडे संशोधक वैभव तिडके व व डॉ. शीतल सोमाणी के साथें जो सायन्स फॉर सोसायटी के संशोधक और संस्थापक हैं दरअसल हालही में अमेरिका के ऑस्टिन में हुए ‘अत्त एदर्म्ति ध्हहर्दूंन्दह र्णेर्त्ह्ि (अएघ्ग)ठ नाम की अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा को इन्होने अपने प्रोजेक्ट के जरिये प्रथम पुरस्कार जीतों विश्व स्तर परदेश का नाम उचाई पर ले जाने वाले इन दोनों अनुसन्धान के विद्यार्थियों से कृषिभूमि ने खास बातचीत की.......

कृषिभूमि : यह डेल पुरस्कार प्राप्त करने के बाद आपको कैसा लगा?

जवाब : इस प्रतियोगिता में 110 देशों से 2600 संशोधन प्रकल्प आये थें जिसमें से पांच को चुना गया थों इन पांच में हमारा प्रथम क्रमांक आयों जिसके लिए हमने 35 लाख रुपये का इनाम मिलों साथ ही हमने पीपुल्स च्वाइस अवार्ड भी जीता जिसके लिए हमें एक हजार डॉलर का इनाम मिलों इसमें अपने प्रोजेक्ट के बारे में बताने के लिए हर एक को नब्बे सेकंद का समय दिया गया थों जिसको हमने महज साठ सेकंद में ही पूरा कर दियों

कृषिभूमि : प्रौद्योगिकी के छात्र होने के नाते आप उच्च तकनीक उत्पाद बना सकते थे, लेकिन आपने सौर संचालन ड्रायर बनाने का क्यों सोचा?

जवाब : हम दोनों महाराष्ट्र के मराठवाडा क्षेत्र के बिड जिले के अम्बाजोगाई गाव से हैं हमने अपने आखों के सामने देखा है सूखे से किसान किस तरह बेहाल होता हैं साथ ही बरसात के मौसम में पानी से बर्बाद होती उनकी फसल को भी देखा हैं तब से हमने सोचा कि हम अपने किसानों की भलाई के लिए जरुर कोई ऐसा साधन बनाएंगे जो उनकी उपज को बर्बाद होने से बचाऐं और तभी सौर संचालन ड्रायर बनाने का विचार हमारे दिमाग में आयों अगर देखा जाये तो प्रति वर्ष भारत फल का ५० मिलियन टन उत्पादन और सब्जियों का 85 लाख टन उत्पादन लेता है लेकिन उसमें से 20-30% उत्पादन अनुचित हैंडलिंग और भंडारण व्यवस्था न होने की वजह से बाजार तक नहीं पहुच पाता हैं इस साधन के माध्यम से किसान को कम से कम अपनी उपज का सौ प्रतिशत लाभ तो मिल पायेगों

कृषिभूमि : आपके उत्पाद की खासियत क्या है?

जवाब : बाजार में कई तरह के सोलर ड्रायर उपलब्ध हैं लेकिन जो सोलर ड्रायर हमने बनाया है वह ग्रामीण किसान को ध्यान में रखते हुए बनाया हैं हमारी तकनीक प्रवाहकत्त्व पर आधारित हैं यह मशीन बिजली की आपूर्ति पर निर्भर नहीं हैं यह मशीन अन्य सोलर ड्रायर की अपेक्षा 40% से प्रसंस्करण समय कम लेती हैं यहमशीन विभिन्न फल, सब्जियों के साथ ही मछली आदि को सुखा सकती हैं खास बात यह है कि पदार्थों की रंग, सुगंध और आवश्यक पोषक तत्वों को जैसे के तैसे बनाए रखती हैं इस मशीन में फल और सब्जियों को सुखाने के लिए 6-8 घंटे लगते है जबकि, मछली सुखाने के लिए 11 घंटे का समय लगता हैं

4 वर्ग मीटर मशीन में एकसाथ 12 किलोग्राम उत्पादन सुखाया जा सकता हैं इसे बनाने में एल्युमीनियम, ऑनसाइट इन्सुलेशन और प्लास्टिक शीट का उपयोग किया गया हैं इस मशीन को आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता हैं इसकी कीमत 3,500 रुपये वर्ग मीटर हैं

कृषिभूमि : क्या आपने पेटेंट के लिए आवेदन किया है?

जवाब : हमने पेटेंट आवेदन दायर किया हैं साथ ही नए आविष्कारों के लिए यूएनईपी के साथ काम कर रहे हैं संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम से प्राप्त नीधि के द्वारा हमने एक पायलट प्रोजेक्ट और गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला की स्थापना की हैं

कृषिभूमि : आपके इस प्रोजेक्ट के लिए किसानों से क्या प्रतिक्रिया मिली है?

जवाब : हमने शुरुआत में गोवा के पास सावंतवाडी में और मुंबई में विलेपार्ले में पायलट प्रोजेक्ट स्थापित किया हैं हम उत्पाद की प्रौद्योगिकी और विपणन के व्यावसायीकरण के लिए कदम उठा रहे हैं हमारा मुख्य उद्देश्य किसानों तक पहुंचना हैं अब तक हमें औरंगाबाद से ८ आर्डर मिल चुके हैं इस मशीन के सन्दर्भ में अधिक जानकारी vaibhavtidke@gmail.com या shtlsomani283@gmail. इन इमेल पर प्राप्त कर सकते हैं

कृषिभूमि : यह तो केवल शुरुवात है, भविष्य में समाज के लिए आपका क्या योगदान रहेगा?

जवाब : हम निश्चित रूप से किसानों को लाभ पहुचाने के लिए अधिक उत्पादों को डिजाइन करना चाहेंगें साथ ही हम ग्रामीण भारत के लिए बिजली से मुक्त अंडे इनक्यूबेटर, हल्दी प्रसंस्करण आदि मॉडल पर काम कर रहे हैं मुख्य रूप से हम बताना चाहेंगे कि हमने /समाज के लिए विज्ञान/ (ए4ए) इस संस्था की शुरुवात की है जिसमें मैडिकल साईंसिस, इंजीनियरिंग के विभिन्न क्षेत्रों से और बिज़नेस मैनेजमैंट स्टडीज़ आदि क्षेत्रों से कई सदस्य जुड़ गए हैं जो नए आविष्कार करने के लिए सक्रीय हैं ए४ए की यात्रा २००८ में शुरू हुईं विज्ञान के सिद्धांतों और नवाचारोंका उपयोग कर समाज की समस्याओं को हल करने का हमारा उद्देश्य हैं हम एक ऐसी दुनिया का सपना देख रहे है जहाँ स्थाई प्रौद्योगिकी के माध्यम से आम आदमी सुविधाजनक और आरामदायक जिंदगी जिऐं

हिप्र में केसर और स्ट्राबेरी की खेती अब किसी भी मौसम में

शिमला कृषि क्षेत्र में एज इंडिया एग्रोटेक की हिमाचल प्रदेश में अहम भूमिका हैं एज इंडिया एग्रोटेक केसर और स्ट्रॉबेरी की ऐसी किस्म (डे न्यूट्रल) पेशकर रहा है जो किसी भी मौसम में बाधित नही हो सकतीं एज इंडिया एग्रोटेक एक ऐसा छत्र है जिसके नीचे कृषि से सम्बंधित कई उपाय योजनाओं की जानकारी मिलती हैं कैलिफोर्निया के एक विशेषज्ञ बॉब नॉटलमैन ने कहा कि एज इंडिया एग्रोटेक की इन किस्मों की जांच ईआईए के विशेषज्ञ अनुसंधानकर्ताओं ने की हैं डे न्यूट्रल ऐसी किस्में होती हैं जो बिना किसी खास मौसम के सालों भर फलदायी होती हैं दिन या रात के बड़े छोटे होने का इसकी पैदावार पर कोई असर नहीं डालतों यह किस्म हिमाचल प्रदेश में 200 से 3,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित खुले मैदानों में उगाई जा सकती हैं एज इंडिया के महेश सूद और विवेक शर्मा ने बताया कि आयातित किस्मों की नर्सरी धानुला, माशोब्रा, सेंज और कुफरी में स्थापित की गई हैं

आगामी 9 सितंबर से गणेश उत्सव मुंबई में धूमधाम से मनाया जायेगा। गणेश जी की मूर्ति की सजावट करता मूर्ति कलाकार

निश्चित आहार और पोषण सुरक्षा के लिए विस्तारित फसल सुरक्षा

आर. जी. अग्रवाल, ग्रूप चेयरमैन
धनुका एग्रीटेक लिमिटेड

आहार और पोषण सुरक्षा–स्थिति और चिंताएं

देश ने खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्रा में पांच गुणा वृद्धि हासिल की है ;1950.51 में महज़ 5ण्08 करोड़ टन से बढ़कर 2012.13 में 25ण्74 टनद्ध, जो इस बात का सूचक है कि पैदावार बढ़ाने वाली तकनीकों में गुणात्मक बदलाव ;बेहतर तकनीकों के मेल, उपयुक्त राजनीतिक माहौल, तकनीकों के तेज हस्तांतरण और अन्य ज़रूरी चीजों की उपलब्धताद्ध से इस तरह की प्रशंसनीय वृद्धि आगे भी हासिल की जा सकती है। हालांकि, खाद्य पदार्थों के उत्पादन में इज़ाफा आबादी में तेज़ वृद्धि के अनुरूप नहीं रहा। तेज आर्थिक वृद्धि के कारण बढ़ रही आय को देखते हुए अनुमान है कि 2020 और 2050 तक खाद्य पदार्थों की ज़रूरत क्रमशः 29ण्7 और 45 करोड़ टन हो जाएगी। वास्तविक अर्थों में, प्रति व्यक्ति/प्रतिदिन खाद्य पदार्थों की उपलब्धता 1991 के 510 ग्राम से कम होकर 2011 में 462ण्9 ग्राम हो गई ;स्रोतः एग्रिल, स्टैट, एट ए ग्लांस 2012द्ध। ऐसे में भारतीय आबादी की पोषण संबंधी स्थिति अभी भी बेहद महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है।

श्री राहुल धनुका, निदेशक ;मार्केटिंगद्ध बेस्ट अंडर ए बिलियन कंपनी पुरस्कार लेते हुए, फ़ोटो

एक तरफ खाद्य पदार्थों के मामले में बदल रही पसंद या प्राथमिकताओं के साथ बढ़ रही आबादी और मांग में हो रही वृद्धि और दूसरी तरफ़ तकनीकी कमज़ोरी, कम हो रही कृषि योग्य जमीन, लागत की बढ़ती कीमतों, तकनीकों तक सीमित पहुंच यानी तकनीकों के कम उपयोग, जलवायु संबंधी बदलाव और कीटनाशकों के उपयोग के परिदृश्य में संभावित बदलाव, प्राकृतिक संसाधनों में कमी आदि से खाद्य पदार्थों के उत्पादन को बढ़ाने के मामले में कई सारी गंभीर चुनौतियां सामने आ रही हैं। स्थिति आगे और कठिन लगती है, क्योंकि जमीनी हकीकत से नावाकिफ कुछ बाहरी आबादी पर्यावरण को बचाने के बहाने फसलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशको के उपयोग का विरोध और ऑर्गेनिक यानी जैविक कृषि की वकालत कर रहे हैं। कीटनाशक चीजों के उपयोग पर प्रतिबंध के लिए भावनात्मक उद्घोषणा और एक कानून की मांग से लोग खेती में कीटनाशकों के उपयोग, सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ने वाले उसके असर के बारे में भ्रमित हो गए हैं।

राष्ट्रीय और राज्य स्तरों पर उत्पादन में अंतर को खत्म करना

खेती के लिए बड़ी मात्राा में जमीन के उपयोग ;48 प्रतिशतद्ध के बावजूद भारत में कुल फ़सल उत्पादकता कई अन्य देशों की तुलना में काफ़ी कम है। अमेरिका में चावल और मक्के का प्रति हेक्टेअर उत्पादन भारत की तुलना में क्रमशः 2ण्3 गुणा और 4ण्8 गुणा अधिक है, जबकि गेहूं के मामले में चीन का प्रति हेक्टेअर उत्पादन भारत से 1ण्7 गुणा अधिक है। गन्ने के मामले में मॉरीशस का प्रति हेक्टेअर उत्पादन भारत की तुलना में 1ण्1 गुणा अधिक है ;एशिया और प्रशांत, बैंकॉक, 2010 के लिए एफएओ क्षेत्राीय कार्यालयद्ध। चूंकि फ़सल योग्य भूमि के विकास की संभावना काफी कम है, ऐसे में विभिन्न राज्यों और राज्यों के भीतर कुल खाद्यान उत्पादन में अंतर को कम करना एक अहम विकल्प है। नौ राज्य ;गुजरात, उत्तराखंड, झारखंड, असम, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान और महाराष्ट्रद्ध की औसत खाद्य उत्पादकता देश की कुल औसत से भी कम है। जबकि पंजाब की उत्पादकता सबसे अधिक 4339 किलो/प्रति हेक्टेअर है उड़ीसा में यह महज 1297 किलो/प्रति हेक्टेअर था, जो पंजाब की तुलना में 3ण्3 गुणा कम है ;स्रोतः एग्रिल, स्टैट, एट ए ग्लांस–2012द्ध।

कीटनाशको का इस्तेमाल–वर्तमान और भविष्य

प्राचीन काल से ही किसानों को कीट का सामना करना पड़ा है। इस बात के सबूत हैं कि 2000 बीसी पूर्व भी लोग अपनी फ़सलों की रक्षा के लिए कीटनाशको का उपयोग करते थे। सबसे पहला ज्ञात कीटनाशक तात्विक सल्फर डस्टिंग था, जिसका उपयोग प्राचीन मेसोपोटैमिया के प्राचीन सुमेर में लगभग 4500 साल पहले किया जाता था। फ़सलों की उत्पादकता बढ़ाने और उसकी रक्षा करने के लिए फ़सलों की रक्षा के फायदों का और रासायनिक उर्वरकों और सिंचाई से पैदा होने वाली उच्च पैदावार देने वाली फ़सलों की किस्मों को अलग करना कठिन है। भारत के संदर्भ में किए गए कई सारे अध्ययनों ने खाद्यानों की उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाने में रासायनिक कीटनाशको के अहम सकारात्मक योगदानों के बारे में बताया है। कीटनाशको का उपयोग कृषि और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों दोनों में होता है। वनारोपण और पशुओं की सुरक्षा में भी कीटनाशको का काफी अधिक उपयोग होता है।

विनाशकारी कीटों से फ़सल को क्षति

डिविजन ऑफ एग्रोकेमिकल्स, आईएआरआई ;2008द्ध द्वारा किए गए अध्ययन में बताया गया है कि विभिन्न फ़सलों के मामले में 8 से 90 प्रतिशत की क्षति को रोका जा सकता है। सबसे अधिक क्षति कपास में ;49 से 90 प्रतिशतद्ध होती है और उसके बाद दालें ;40 से 88 प्रतिशतद्ध आती हैं। 2007 के 2 मार्च को राज्यसभा में गैर–तारांकित प्रश्न संख्या 62 के जवाब में केंद्रीय कृषि मंत्राी ने कहा कि विनाशकारी कीटों, खर–पतवारों और बीमारियों की वजह से फ़सल उत्पादन में 10 से 30 प्रतिशत के बीच क्षति होती है। साफ़ है कि क्षति की यह सीमा मौसम और कीटों, बीमारियों और खर–पतवारों की मात्राा के आधार पर कम या अधिक हो सकती है। पेट्रोलियम और रसायन पर बनी स्थायी समिति की 37वीं रिपोर्ट ;2002द्ध के अनुसार, कीटों की वजह से होने वाली वार्षिक क्षति 90ए000 करोड़ रुपये की है। जबकि, 2008 में न्यूनतम समर्थन मूल्य ;एमएसपीद्ध पर आधारित एक अनुमान के अनुसार यह क्षति 2ण्5 लाख करोड़ था ;अग्रवाल, 2008द्ध। आने वाले सालों में एमएसपी में वृद्धि के कारण इस समय यह क्षति लगभग 3 लाख करोड़ प्रति वर्ष की हो सकती है।

कीटनाशको के उपयोग पर निवेश से रिटर्न

डिविजन ऑफ एग्रोकेमिकल्स, आईएआरआई ;2008द्ध के अनुसार, रासायनिक नियंत्राण के मामले में 1रू28 का सर्वोच्च लागतः मुनाफे का अनुपात मूंगफली में है। इसके बाद गन्ना ;1रू13द्धए सरसों ;1रू12द्धए सूरजमुखी ;1रू8द्ध और कपास, चावल और सब्जियों में यह अनुपात 1रू7 है। सामान्य तौर पर यह माना जाता है कि पौधों के संरक्षण पर एक रुपया खर्च करने से उत्पाद के रूप में पांच रुपये आ जाते हैं।

रासायनिक कीटनाशको के उपयोग की सीमा

भारत में कीटनाशको का उपयोग अमेरिका, यूरोप, जापान, चीन आदि देशों की तुलना में बेहद कम ;0ण्5 किलो/प्रति हेक्टेअरद्ध है। इन देशों में इसका उपयोग भारत की तुलना में 20 गुणा अधिक है, और उनके यहां फ़सलों की पैदावार भी हमारी तुलना में काफ़ी अधिक है। साफ़ है कि फ़सलों की सुरक्षा से जुड़े उत्पादों की खपत बढ़ाने की काफ़ी अधिक संभावना है। हरित क्रांति के कारण कीटनाशक दवाओं के उपयोग में काफ़ी अधिक इज़ाफा हुआ और इनकी खपत बढ़कर 1955.56 ;सिंह और पार्शद, 2012द्ध के 2ए353 टन की तुलना में 1973.74 में 50ए432 टन हो गई। हरित क्रांति के बाद भारत में कीटनाशको ;तकनीकी ग्रेडद्ध का सबसे अधिक उपयोग 1988.89 ;75ए418 टनद्ध हुआ। 1997.98 से 2004.05 के दौरान यह खपत 50ए583 टन थी। कीटनाशको के उपयोग में इस कमी का मुख्य कारण पारिस्थितिकी मित्रा नयी तरह के कीटनाशको का उपयोग था, जहां इसकी काफ़ी कम मात्रा उपयोग होती थी।

जबकि, कीटनाशको के विवेकपूर्ण उपयोग के मामले में किसानों को सघनता से जानकारी देने का फ़ायदा यह हुआ कि फ़सल सुरक्षा के दायरे में आने वाले क्षेत्राों का और विस्तार हुआ।

पौधे की तय सुरक्षा के तहत आने वाले क्षेत्राों और फ़सलों में वृद्धि की संभावना

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 2009.10 के दौरान पांच राज्यों–यूपी ;22ण्8 प्रतिशतद्ध, पंजाब ;13ण्9 प्रतिशतद्ध, महाराष्ट्र ;11ण्1 प्रतिशतद्ध, हरियाणा ;9ण्7 प्रतिशतद्ध और राजस्थान ;8ण्4 प्रतिशतद्ध ने कुल मिलाकर देश में हुए कीटनाशको के उपयोग का 66 प्रतिशत से अधिक उपयोग किया ;ण्पदकपेंजंजणबवउद्ध। यह खपत कुछ फ़सलों –चावल, कपास और गेहूं ;सभी मिलाकर 52 प्रतिशतद्ध में सबसे अधिक हुई, जबकि दालों, सोयाबीन, गन्ना, आलू, चाय और फलों ;कुल मिलाकर 35 प्रतिशतद्ध के मामले में काफी कम खपत हुई। इसलिए साफ़ तौर पर कहा जा सकता है कि दालों और सब्ज़ियों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कीटनाशको के विवेकपूर्ण उपयोग से इसमें इज़ाफे की काफी अधिक संभावना है और ऐसा होना चाहिए, क्योंकि ये फ़सलें क्रमशः प्रोटीन और जरूरी विटामिनों की मुख्य स्रोत हैं।

कीटनाशको के अवशिष्ट के बारे में गलतफहमियां वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित नहीं

कभी कभी प्रेस और मीडिया में फलों, सब्जियों आदि में कीटनाशको के अवशिष्ट के बारे में खबरें होती हैं। वैज्ञानिक तथ्य इस तरह की गलतफहमियों का समर्थन नहीं करते हैं। महज कीटनाशको की उपस्थिति से यह साबित नहीं हो जाता कि अमुक उत्पाद अस्वास्थ्यकर है। भारत सरकार के कृषि मंत्राालय ने इस संबंध में 10 मई, 2007 और 27 अप्रैल 2012 को क्रमशः लोकसभा और राज्य सभा में तारांकित और अतारांकित प्रश्नों के जवाब दिए थे। भारत सरकार ने एक डिविजन का गठन किया है जो देशभर के बाज़ारों में उपलब्ध फलों और सब्जियों में कीटनाशकों के अवशिष्ट की लगातार निगरानी करता है। एआईसीआरपी की इस मामले में रिपोर्ट और आईएआरआई ने साफ किया है कि 2010 के अप्रैल से 2011 के मार्च के बीच खाद्य पदार्थों के जिन 15ए321 नमूनों का विश्लेषण किया गया, उनमें महज 1ण्23 प्रतिशत नमूनों में ही कीटनाशको के अवशिष्ट तय एमआरएल से अधिक मिले। ऐसे में इस मामले में भयाक्रांत होने की कोई जरूरत नहीं हैं।

गुणवत्तायुक्त कीटनाशक उपलब्ध कराने की धानुका की पहल

पौधों की सुरक्षा करने वाले रसायनों के क्षेत्रा में धनुका ग्रुप एक प्रमुख और प्रतिष्ठित व्यावसायिक समूह/कंपनी है। इस समूह ने अमेरिका, जापान और नॉर्वे के प्रमुख निर्माताओं के साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग स्थापित किया है। अपने अस्तित्व के तीन दशकों से भी अधिक के दौरान समूह किसानों को अत्याधुनिक पर्यावरण मित्रा कीटनाशक उपलब्ध करने की भरसक कोशिश करता आ रहा है। देशभर में अपनी उपस्थिति के जरिए समूह आईसीएम पर फोकस के साथ एकीकृत फ़सल प्रबंधन से जुड़ी नई कृषि तकनीकों के बारे में किसानों को प्रशिक्षित और जागरूक करने के प्रति प्रतिबद्ध है। होशंगाबाद जिले में कृषि विस्तार प्रबंधन के लिए मध्य प्रदेश सरकार के साथ निजी–सार्वजनिक सहयोग ;पीपीपीद्ध करने वाला यह पहला समूह था। इसने हैदराबाद के एमएएनएजीई, एएमयू, आनंद एंड एनएयू, डीएईएसआई प्रोग्राम के लिए नवसारी, राजस्थान सरकार और चोमू के केवीके के साथ किसानों के प्रशिक्षण के लिए पीपीपी किए।

सारांश खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना और अधिक से अधिक क्षेत्राों और फ़सलों को निश्चित फसल सुरक्षा के दायरे में लाना सबसे बेहतर और व्यावहारिक विकल्पों में एक है। एकीकृत फ़सल प्रबंधन के प्रति समग्र पहल और नयी दवाओं के पंजीकरण की प्रक्रिया को गति देना, आईसीएआर संस्थानों और एसएयू को षोध और विकास के लिए अधिक संसाधन की उपलब्धता, षोध और विकास के लिए कीटनाशक उद्योग को सहायता, और पीपीपी के तहत अधिक से अधिक कार्यक्रमों के आयोजन की इस मामले में शीध्र जरूरत है, ताकि कृषि उत्पाद से जुड़े डीलरों और किसानों को जागरूक बनाने के साथ ही उन्हें जरूरी प्रशिक्षण दिया जा सके। प्रशिक्षण के तहत कीटनाशको के विवेकपूर्ण उपयोग के मामले में खेतों में इसका प्रदर्शन भी शामिल है। सरकारी विभागों के कर्मचारियों को नई और पर्यावरण मित्रा दवाओं के बारे में जानकारी, गुणवत्तायुक्त उत्पादों आदि की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी इस प्रक्रिया को गति देने के लिए जरूरी है। महज़ खर–पतवारों, बीजों और मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारियों के प्रभावी नियंत्राण से खाद्यानों और दालों की काफ़ी अधिक उत्पादकता बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं।

अरहर के प्रमुख कीटों एवं रोगों का समेकित प्रबन्धन

डॉ. रवि प्रकाष मौर्य, कार्यक्रम समन्वयक/प्राध्यापक, कृशि विज्ञान केन्द्र, अम्बेडकर नगर, उ.प्र.
महेष सिंह, षोध छात्र, पादप रोग विज्ञान, न.दे. कृशि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय कुमारगंज, फैजाबाद– 224 229

प्रस्तावना

अरहर का स्थान दालों में प्रमुख है, यह अपने प्रदेष में चने के बाद दूसरे स्थान पर है। यह फसल अकेली तथा ज्वार, बाजरा आदि के साथ सहफसली के रूप में बोई जाती है। अरहर में कीटों एवं रोगों का प्रकोप होता है जिसका समय से नियंत्रण करने से हानि से बचा जा सकता है। इसके लिए एकीकृत / समेकित प्रबन्धन अपनाया जाय तो ज्यादा अच्छा होगा। समेकित प्रबन्धन एक ऐसी प्रणाली है जिसमें फसलों को हानिकारक कीटों तथा बीमारियों से बचाने के लिए एक से अधिक तरीकों को प्राकृतिक रूप से व्यवहारिक हो उसका उपयोग समुचित ढंग से किया जाता है। यदि किसान भाई समुचित ढंग से प्रमुख रोगों एवं कीटों की पहचान कर उसका निदान करें तो अरहर की अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

अरहर में लगने वाले प्रमुख कीट एवं उसका प्रबन्धन

1.अरहर की फली मक्खीः–

पहचानः

यह छोटी चमकदार काले रंग की घरेलू मक्खी की तरह परन्तु आकार में छोटी होती है। इसकी मादा फलियों में बन रहे दानों के पास अण्डे देती है जिससे निकलने वाली गिडारें फली के अन्दर बन रही अविकसित मुलायम दानों को खाकर हानि पहुंचाती है। आर्थिक क्षति स्तर 5 प्रतिषत प्रकोपित फली है।

प्रबन्धनः

◆गर्मी में अरहर के अवषेश पौधों को नश्ट करे दें।

◆फसल की बुआई और कटाई समय से करनी चाहिए।

◆आर्थिक क्षति स्तर पर इमिडाक्लोरोपिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. या डाईमेथोएट 30 ई.सी. एक लीटर या एसिटामिप्रिड 20 डब्लू.पी., 150 ग्राम को 500 से 800 ली. पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से प्रभावित फसल पर छिड़काव करें।

2.फली छेदक कीट (हेलिकोवर्पा)

पहचानः

प्रौढ़ पतंगा पीले बादामी रंग का होता है अगली जोड़ी पंख पीले भूरे रंग के होते हैं तथा पंख के मध्य में एक काला निषान होता है। पिछले पंख कुछ चौड़े मटमैले सफेद से हल्के रंग के होते हैं तथा किनारे पर काली पट्टी होती है। सूड़िया हरे पीले या भूरे रंग की होती है तथा पार्ष्व में दोनों तरफ मटमैले सफेद रंग की धारी पायी जाती है। इनकी गिडारे फलियों के अन्दर घुसकर दानों को खाकर हानि पहुचाती है। क्षतिग्रस्त फलियों में छिद्र दिखाई देता है, तथा छिद्रों के स्थान पर सूंड़ी का मल व जाला दिखाई देता है।

प्रबन्धनः

◆कीट के निरीक्षण हेतु पांच गंधपास एवं प्रबंधन हेतु 20–25 गंधपास प्रति हेक्टेयर की दर से लगाकर नर प्रौढ़ कीटों को आकर्शित कर प्रति दिन प्रातः मार देना चाहिए। पुराने सेप्टर को 14 दिनों पर बदलते रहना चाहिए। 5–6 प्रौढ़ पतंगे औसतन प्रति गंधपास 2 से 3 दिन लगातार आने पर या 3 अंडे या 2–3 नवजात सूड़ी या एक पूर्ण विकसित सूंड़ी प्रति पौधा दिखाई देने पर या पांच प्रतिषत प्रकोपित फली होने पर एच. एन.पी.वी. 350 लार्वी समतुल्य को 300 ली. पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करना चाहिए या

◆एजाडिरेक्टीन 2.5 लीटर को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए या

◆फेनवेलरेट 20 ई.सी. का 750 मि.ली. अथवा साइपरमेंथिन 20 ई.सी. का 400 मिली. या इन्डक्साकार्व 14.5 एस.सी. 400 मिली. को 600 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

3.पत्ती लपेटक कीट

पहचानः

इस कीट की सूंड़ी हल्के पीले रंग की होती है तथा प्रौढ़ कीट (पतंगा) छोटा एवं गहरे भूरे रंग का होता है। इसकी सूड़िया 3–4 पत्तियों को लपेटकर सफेद जाला बुनकर उसी में रहती है और पत्तियों को खाती है। अगेती फसलों में फूलों एवं फलियों को भी नुकसान पहुचाती है।

प्रबन्धनः

देर से पकने वाली प्रजातियों में इस कीट के नियन्त्रण की आवष्यकता नहीं होती है। जल्दी पकने वाली प्रजातियों में यह कीट फूल एवं फलियों को हानि पहुंचता है इसके लिये मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. 1.5 लीटर या इण्डोसल्फान 35 ई.सी. 1.5 लीटर को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

अरहर में लगने वाले प्रमुख रोग एवं उसका प्रबन्धन

1.अरहर का उकठा रोग

लक्षण

यह यूजेरियम नामक कवक से होता है। यह पौधों में पानी व भोज्य पदार्थों के संचरण को रोक देता है जिससे पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है और बाद में पौधा पूरी तरह सूख जाता है। इसकी जड़े सड़कर गहरे रंग की हो जाती है एवं छाल हटाने पर जड़ से लेकर तने तक काली धारियों पायी जाती है।

प्रबन्धन

◆गर्मी में गहरी जुताई करनी चाहिए।

◆जिस खेत में उकठा रोग का प्रकोप अधिक हो उस खेत में 3–4 साल तक अरहर की फसल नहीं लेनी चाहिए।

◆रोग मुक्त खेत से बीज का चुनाव करें।

◆ज्वार और अरहर की सहफसली खेती करने से कुछ हद तक उकठा रोग का प्रकोप कम हो जाता है।

◆रोग युक्त पौधे के उखाड़ कर जलावन के रूप में प्रयोग करें।

◆बीज षोधन हेतु 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा विरिडी तथा एक ग्राम विटावैक्स प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से करें।

◆कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिषत 1 ग्राम, थाइरम 50 प्रतिषत 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।

◆2.5 किग्रा. ट्राईकोडर्मा माल्ट को 60–65 किग्रा. गोबर की सड़ी खाद में मिलाकर एक सप्ताह बाद में प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के समय भूमि में मिला दिया जाय।

अरहर का बन्झा रोग

2. लक्षण

यह विशाणु जनित रोग है जिसका वाहक माइट होता है रोग ग्रसित पौधे में पत्तियॉ अधिक लगती है, पत्तियां छोटी तथा हल्के पीले रंग की हो जाती है। पौधे का आकार छोटा हो जाता है। षाखाएं हा घनी जाती है। फूल एवं फलियां नहीं बनती है।

प्रबंधन

◆इस रोग का कोई प्रभावी रासायनिक उपचार नहीं है। अतः इस रोग से बचाव के लिये षस्य क्रियायें अति महत्वपूर्ण है।

◆जिस खेत में अरहर बोना हो उसके आस–पास अरहर के पुराने एवं स्वयं उगे हुये पौधों को नश्ट कर देना चाहिए।

◆रोग रोधी किस्में प्ब्ब्स्151 (जागृति) को बोना चाहिए।

◆पौध से पौध एवं लाइन से लाइन की उचित दूरी बनाकर बोएं

◆खड़ी फसल में प्रकोप होने पर माइट वेक्टर के लिये मेटा सिस्टास अथवा केल्थेन 0.1 प्रतिषत की मात्रा का छिड़काव करना चाहिए।

3. सूत्र कृमि

सूत्र कृमि छोटी–छोटी प्रायः आंख से न दिखाने वाली मृदा में एवं पुराने अरहर के जड़ों में रहती है यह फसल उगने पर उसके जड़ से रस चूसकर पौधे का नुकसान करती है, जिससे पौधा पीला होकर सूख जाता है।

प्रबन्धन

इस बीमारी की रोकथाम हेतु गर्मी में गहरी जुताई आवष्यक है एवं खेत में 50 किग्रा. निवोली प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

फाइटोप्थोरा अंगमारी

लक्षण

यह रोग फाइटोप्थोरा ड्रेचस्केरी उपजाति कैजनी नामक कवक से होता है। रोग ग्रसित पत्तियों पर भूरे रंग के घब्बों का बनना तथा तने पर जमीन की सतह या एक से दो फीट की उंचाई पर पत्तियों का बनना है। बाद में तने का उपरी भाग सूख जाता है।

प्रबन्धनः

◆पन्त अरहर–3, सिहोर–197, मालवीय अरहर–97 आदि रोग रोधी किस्मों को उगायें।

◆प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।

◆एप्रान या रिडोमिल 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।

◆रोगी फसल पर रिडोमिल एम जेड–75, 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

अरहर की फसल में एकीकृत नाषी जीव प्रबन्धन

एकीकृत नाषी जीव प्रबन्धन का अभिप्राय प्राकृतिक पर्यावरण को ध्यान में रखते हुये उपस्थित नाषी जीवों को मिली जुली सुरक्षा विधि अपनाकर समुचित ढंग से प्रबन्धन करना है। अरहर की फसल हेतु निम्न क्रियाओं द्वारा रोग एवं कीटों से आर्थिक नुकसान से बचाया जा सकता है।

◆गर्मी में मिट्टी पलटने वाले हाल से गहरी जुताई करें।

◆बीज का चुनाव स्वस्थ पौधों से करें।

◆षोधित बीज ही बोयें।

◆फसल चक्र अपनाएं।

◆पौध से पौध एवं लाइन से लाइन की वांछित दूरी पर बुआई करें।

◆कटाई के बाद अवषेश जड़ को नश्ट कर दें।

◆रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नश्ट कर दें।

◆खेत में लाइट प्रपंच लगाकर कीटाों को नश्ट करें।

◆खरपतवार एवं निराई–गुड़ाई समुचित रूप से करें।

◆अरहर के खेत में चिड़ियों को बैठने के लिए बांस की लकड़ी का टी आकार का 10 खपच्ची प्रति हेक्टेयर के हिसाब से गाड़ दें।

◆जब षत प्रतिषत पौधों में फूल आ गये हो और फली बनना षुरू हो गया हो उस समय मोनोक्राटोफास 36 प्रतिषत एस.एल. 1.25 लीटर को 700 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

◆उकठा रोग के नियन्त्रण के लिये ट्राइकोडर्मा 4 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से षोधन करें।

उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए किसान भाई अरहर की खेती करें तो निष्चित ही उत्पादन के साथ ही साथ गुणवत्ता युक्त उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

बारानी क्षेत्रों में जल संरक्षण अपनाकर उपज बढ़ायें

भारत का षुश्क व रेतीला क्षेत्र राजस्थान में है, थार मरूस्थल के नाम से जाना जाता है। कम व अनियमित वर्शा, उच्च वायुगति, गर्मी व अधिक वाश्पन व वाश्पोत्सर्जन यहां की जलवायु को प्रतिकूल बनाने वाले प्रमुख कारक है। यहां अधिकांष भाग में बलुई मिट्टी पाये जाने के कारण यहां की भूमि की जल धारण क्षमता काफी कम है। पर्याप्त सिंचाई स्त्रोतों के अभाव व उपरोक्त भू–जल वायविक कारकों के कारण यहां प्रायः सूखे, की पुनरावृत्ति होती रहती है। प्रतिकूल जलवायु के कारण इस क्षेत्र में फसल व चारे के उत्पादन में वर्शभर अनिषिचितता बनी रहती है। थार मरूस्थल विष्व के अधिकतम जनसंख्या घनत्व वाले मरूस्थलों में से एक है। अतः यहां फसल व चारे की उत्पादकता में स्थायीत्व लाना अतिआवष्यक है। जो वर्शा जल के उचित संरक्षण, संग्रहण व उपयोग से ही सम्भव है। इस हेतु निम्न विधियां अपनाई जानी चाहिए :–

1.खेत को समतल बनाकर मेड बन्दी करना :–

समतल खेत से जल का बहाव कम होता है जबकि असमतल सतह से वर्शा का पानी इधर–उधर बह जाता है। समतल खेत से जल का बहाव कम होने के कारण नमी गहराई तक बनी रहती है। खेत के चारों और मेड न होने से वर्शा के साथ खेत के पोशक तत्व, खाद व बीज बहकर बाहर जा सकते हैं अतः खेत को समतल करके उसके चारों और मेड बन्दी करने से वर्शा जल, खाद, बीज, पोशक तत्वों आदि का संरक्षण होता है एवं अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

2.समोच्च बन्ध :–

इस तकनीक द्वारा कम ढ़लान वाले जैसे 2 से 3 प्रतिषत ढाल वाले खेतों में ढाल के विपरित दिषा में मिट्टी के समोच्च अवरोध बनाकर सतही अपवाह व मृदा क्षरण को रोका जा सकता है। समोच्च बन्ध बहते हुए पानी की गति को धीमा करके मृदा क्षरण को रोकता है। इसके अलावा पानी के बहाव के मार्ग में अवरोध होने के कारण पानी को मृदा में रिसने के लिए अतिरिक्त समय मिल जाता है। इससे खेत अधिक मात्रा में पानी सोख लेता है जो उत्पादन बढ़ाने में सहायक है।

3. समोच्च नाली :–

यह तकनीक चारागाहों में घास व पौधों के स्थापन में बहुत उपयोगी है। इस तकनीक में खेत में समोच्च नाली बनायी जाती है एवं नाली से निकाली गई मिट्टी ढलान की तरफ मेड के रूप में डाल दी जाती है। वर्शा होने पर सतही अपवाह इस नाली में इक्कठा हो जाता है जो पौधों को लगाने के लिए प्रारम्भिक अवस्था लाभदायक होता है। ढलान की तरफ बनायी गयी मेड बहते पानी के मार्ग में अवरोध का कार्य करती है जिससे पानी जमीन में अधिक मात्रा में रिसता है व घास की पैदावार बढ़ायी जा सकती है।

4.सतही पलवार :–

इस तकनीक में खेत की सतह पर घास–फूस की परत बिछायी जाती है जो मृदा के हवा एवं पानी से होने वाले कटाव को रोकने में बहुत उपयोगी होती है। सतही पलवार से पानी के वाश्प बनकर होने वाले नुकसान में कमी आती है जिससे भूमि में अधिक मात्रा में जल उपलब्ध होता है जो फसलों की पैदावार बढ़ाने में सहायक है। अनुसंधान प्रयोग बताते हैं कि 6 टन प्रति हैक्टेयर की दर से घास की पलवार करने से भूमि के तापमान में 1 से 6 डिग्री सैल्सियस तक की कमी आती है एवं उत्पादक 15 से 20 प्रतिषत तक की बढ़ोतरी सम्भव है।

5.गर्मी के मौसम में गहरी जुताई करना :–

इस तकनीक से मिट्टी की जलधारण क्षमता में बढ़ोतरी होती है अतः रबी की फसल काटते ही खेत में गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे तेज धूप में खेत की मिट्टी तप जाती है जिससे मिट्टी में रहने वाले हानीकारक कीड़े–मकोड़े उनके अंडे, घास आदि नश्ट हो जाते हैं। गहरी जुताई करने से जमीन की कठौर परत टूट जाती है व पानी अधिक गहराई तक पहुंचकर फसलों के लिए लाभदायक होगा। गर्मी के मौसम में गहरी जुताई करने से मृदा की संरचना, भौतिक, रसायनिक एवं जैविक दषाओं में भी परिवर्तन होता है जो फसलों के लिए लाभदायक है।

6.लघु जल ग्रहण क्षेत्र :–

इस तकनीक में लघु जलग्रहण क्षेत्र बनाकर वर्शा जल का संचयन किया जाता है एवं संचयन क्षेत्र में फसलों की बुवाई की जाती है। इस तकनीक में ग्रहण क्षेत्र व संचयन क्षेत्र 1:1 में रखा जाता है एवं खेत में इस हेतु 3 से 5 प्रतिषत का ढलान दिया जाता है जिससे जल संचयन क्षेत्र में अतिरक्त पानी उपलबध हो जाता है जो पैदावार बढाने में बहुत सहायक होता है। यह तकनीक मुख्यतया बारानी फसलों के लिए एवं कम पानी चाहने वाली फसलों के लिए बहुत उपयोगी है।

7.खेतों में तालाब की मिट्टी डालना :–

बलुई मिट्टी की जलधारण क्षमता कम होने के कारण वर्शा का अधिकांष पानी जमीन की नीचली सतहों में बहकर चला जाता है जो फसलों के लिए कोई काम का नहीं होता है। अतः गर्मियों में तालाबों के खाली होने पर इनके पेंदे की मिट्टी खोदकर खेत में डाल देनी चाहिए जिससे मृदा की वर्शा जल को सोखने व धारण करने की क्षमता बढ जायेगी जिससे फसल उत्पादन बढाया जा सकता है।

8. समय पर खरपतवार निकालना :–

खेत में फसलों के साथ उगने वाले खरपतवार फसलों के साथ जगह, प्रकाष, नमी, पोशक तत्व आदि के लिए प्रतियोगिता करते हैं जिससे फसलों को पोशक तत्व व पानी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिल पाते हैं अंततः फसलों की पैदावार कम हो जाती है। इस प्रकार रेतीले क्षेत्रों में उपलब्ध नमी से अच्छी पैदावार लेने के लिए खेत को हमेषा खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।

9.कार्बनिक खादों का प्रयोग करके :–

रेतीले क्षेत्रों की भूमि प्यासी होने के साथ–साथ भूखी भी होती है अतः इन मृदाओं में पोशक तत्व स्तर बढाने, जल को अधिक से अधिक सोखने, जल धारण क्षमता बढाने के लिए अधिक से अधिक भलीभॉति सड़ी हुई कार्बनिक खादों का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे फसल उत्पादन बढ़ाया जा सके।

भेड़ पालन-जानकारी

भेड का मनुष्य से सम्बन्ध आदि काल से है तथा भेड पालन हिमाचल के जन-जातीय क्षेत्रों के निवासियों का एक प्राचीन व्यवसाय है प्राचीन समय से ही किन्नौर, लाहौल-स्पिति, भरमौर, पांगी, कांगडा तथा मण्डी के जन-जातीय क्षेत्र के लोग मुख्यत: भेड पालन पर निर्भर रहें हैं भेड पालक भेड से ऊन तथा मांस तो प्राप्त करता ही है, भेड की खाद भूमि को भी अधिक ऊपजाऊ बनाती है भेड कृषि अयोग्य भूमि में चरती है, कई खरपतवार आदि अनावश्यक घासों का उपयोग करती है तथा उंचाई पर स्थित चरागाह जोकि अन्य पशुओं के अयोग्य है, उसका उपयोग करती है भेड पालक भेडो से प्रति वर्ष मेमने प्राप्त करते है

हिमाचल प्रदेश में लगभग 9 लाख भेडो कई आबादी है प्रदेश में शुद्ध विदेशी नस्लों क्रमशे रैमबुले तथा रशीयन मैरिनो के मेढों द्वारा स्थानीय नस्ल की भेडो का प्रजनन करवाया जाता है ताकि स्थानीय नस्ल कई भेडों कई ऊन की मात्रा प्रति भेड बढाई जा सकें जहाँ सुधारी नस्ल कई भेडो से २.५ किलोग्राम प्रति भेड ऊन प्राप्त होती है वहीं दूसरी ओर स्थानीय नस्लों रामपुर बुशहरी व गद्दी से १ किलोग्राम से भी कम ऊन प्राप्त होती है

प्रदेश सरकार द्वारा दशेड प्रजनन कार्यक्रम के अन्तर्गत चार भेड प्रजनन फार्म व एक भेडो केन्द्र निम्न स्थानों पर खोले गये हैं:-

1.जूरी ज़िला शिमला (रैमबुले व रामपुर बुशहरी भेडें)

2.कडछम, ज़िला किन्नौर (रशीयन मैरिनों भेडें)

३.सरोल ज़िला चम्बा (रैमबुले भेड)

4.ताल ज़िला हमीरपुर (रैमबुले, रशियन मैरिनों,गद्दी व गद्दी कास)

5.मेंढा केन्द्र नगवाई ज़िला मण्डी

विभाग के 4 भेड प्रजनन फार्मों से स्थानीय नस्लें की भेडो के नस्ल सुधार हेतु भेड पालकों को विदेशी नस्लों के मेंढे विक्रय किये जाते है ताकि भेड पालकों की स्थानीय भेड की नस्ल में सुधार लाकर उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकें मेंढा केन्द्र नगवाई से प्रजनन ऋतु में विदेशी नस्ल के मेंढे भेड पालकों को प्रजनन करवाने हेतु उपलब्ध करवाये जाते है प्रजनन काल के समाप्त होते ही यह मेंढे वापिस मेंढा केन्द्र में लाये जाते है ताकि भेड पालकों को वर्ष भर मेंढे पलने का खर्च न वहन करना पडें

भेड प्रजनन नीति:-

प्रदेश में भेडो से अधिक आय प्राप्त करने व उनकी नस्ल सुधार हेतू विभाग द्वारा भेड प्रजनन नीति तैयार की गई है इस नीति के अनुसार स्थानीय गद्दी व रामपुर बुशैहरी नस्ल की भेडों का शुद्ध विदेशी रैमबुले या रशियन मरीनो मेंढों से प्रजनन करवाया जाता है इस प्रजनन के फलस्वरूप पैदा हुई संतान में 50 प्रतिशत गुण देशी नस्ल के तथा 50 प्रतिशत गुण देशी नस्ल के आते है तथा इसे एफ-1 जनरेशन खा जाता है इन एफ-१ जनरेशन की भेडो का फिर से शुद्ध विदेशी रैमबुले या रशियन मरीनो मेंढों से प्रजनन करवाया जाता है इस प्रजनन के फलस्वरूप पैदा हुई संतान में 25 प्रतिशत गुण देशी नस्ल के तथा ७५ प्रतिशत गुण विदेशी नस्ल के आते तथा इसे एफ-2 जनरेशन खा जाता है इस प्रक्रिया से निरंतर पैदा हो रही एफ-2 जनरेशन की भेडो का प्रजनन करवाने के लिए ऐसे मेंढे जिनमें ७५ प्रतिशत गुण विदेशी नस्ल तथा 25 प्रतिशत गुण देशी नस्ल के हों का ही प्रयोग करना चाहिए ताकि पैदा होने वाली संतान में विदेशी नस्ल के 75 प्रतिशत गुण कायम रह सकें

भेड पालन व्यवसाय को अधिक लाभदायक बनाने के लिये कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्रजनन सम्बन्धी:-

•भेड आम तौर पर नौ महीने की आयु में पूर्ण वयस्क हो जाती है किन्तु स्वस्थ मेमने लेने के लिये यह आवश्यक है कि उसे एक वर्ष का होने के पश्चात ही गर्भधारण कराया जाऐं भेडों में प्रजनन आठ वर्ष तक होता है गर्भवस्था औसतन 147 दिन कि होती हैं

•भेड 17 दिन के बाद 30 घण्टे के लिये गर्मी में आती हैं गर्मी के अंतिम समय में मेंढे से सम्पर्क करवाने पर गर्भधारन की अच्छी सम्भावनायें होती हैं

•गर्भवस्था तथा उसके पश्चात जब तक मेमने दूध पीते है भेड के पालन पोषण पर अधिक ध्यान देना चाहिये एक माद्दा भेड को गर्भवस्था तथा उसके कुछ समय पश्चात तक संतुलित एवं पोष्टिक आहार अन्य भेडो की अपेक्षा अधिक देना चाहियें

•भेडो को मिलते वार नर या माद्दा का अनुपात 1:40 से अधिक नहीं होना चाहियेप्रजनन हेतु छोडने के दो माह पूर्व से ही उनके आहार पर विशेष ध्यान दें इस अवधि में संतुलित आहार तथा दाने की मात्रा भी बढा दें

•प्रजनन हेतु छोडने से पहले यह बात अवश्य देख लें कि मेंढे के बहय जननेन्द्रियों की ऊन काट ली गई है तथा उसके खुर भी काट क्र ठीक क्र लिये गये हैं

•नर मेमनों कि डेढ साल से पहले प्रजनन के लिये उपयोग न् करें तथा समय समय पर उनकी जननेन्द्रिया की जानच कर लें यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि वयस्क मेढों को तरुण भेडों के साथ प्रजनन के लिये छोडना चाहियें

•भेडों को प्रजनन के लिये छोडने से पहले यह निश्चित क्र लें कि उन्हें उस क्षेत्र में पाई जाने वाली संक्रामक बिमारियों के टीके लगा दिये गये है तथा उनको कृमिनाशक औषधि से नहलाया जा चुका हैं मेंढे को प्रजनन के लिये अधिक से अधिक आठ सप्ताह तक छोडना चाहिये तथा निश्चित अवधि के पश्चात उन्हें

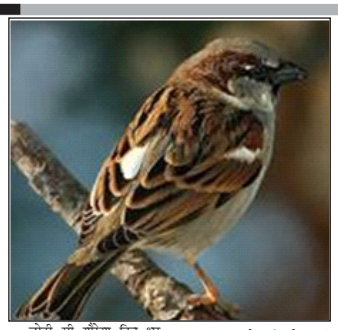

छोटी सी गौरैया दिन भर काम में लगी रहती है। गौरैया बडी प्यासी सी चिडिया है जो हमारे घर आंगन में फुदकती हुई सभी का मन मोह लेती है। भोजन शृंखला के अंतर्गत गौरैया की भूमिका महत्वपूर्ण है। गौरैया की चहचहाहट मोहक होती है। गौरैया का फुदकना हर किसी का मन मोह लेता है। गौरैया को दाना चुगते देखना अच्छा लगता है। घरेलू गौरैया एक बुद्धिमान चिडिया है जिसने अपने को आश्रय परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जिसके कारण एक समय यह विष्व में सबसे ज्यादा पर जाने वाली चहचहाती चिडिया बन गयी थी। लेकिन कभी सर्वत्र दिखाई देने वाली घरेलू गौरैया आज एक रहस्यमयी पक्षी बन गई है जो पूरे विष्व में बहुत तेजी से दुर्लभ हो रही है। चीं-चीं करती हुई फुदकती रहती गौरैया आज विलुप्त होती जा रही है।

विभिन्न भाशाओं में गौरैया के नाम

सामान्यत: भारत में इसे गौरैया के नाम से जाना जाता है। तमिलनाडु तथा केरल में इसे कूरुवी नाम से जाना जाता है। तेलगू में इसे पिच्चुका कहा जाता है। कन्नड भाशा में गुब्बाच्ची तथा गुजरात में इसे चकली कहते हैं। मराठी में इसे चिमानी नाम से बुलाते हैं। पंजाब में इसे चिडी नाम दिया गया है। जम्मू तथा कष्मीर में चेर, पष्चिम बंगाल में चराई पाखी तथा ओडिशा में घरचरिया कहा जाता है। उर्दू भाशा में चिडिया तथा सिंधी भाश में झिरकी कहा जाता है।

सामाजिक प्राणी

एक कहानीगौरैया दाला का दाना लाती है और कौआ चावल, दोनों मिलकर खिचडी बनाते हैं लेकिन कौवा दोनों के हिस्से की खिचडी खा लेती है।

गौरैया सामाजिक पक्षी है जो अधिकतर झुंड में उडती है। एक झुंड में १.५ से २ मील की दूरी तय करता है। अगर बात भोजन तलाष करने की हो तो यह अधिक दूरी भी तय कर सकती है। गौरैया का प्रमुख आहार अनाज के दाने हैं। अगर यह उपलब्ध न हो तो यह अन्य आहार से भी अपना पेट भर लेती है। घरेलू गौरैया परजीवी प्रकृति वाली होती है। यह घरों से बाहर फेंके गए कूडे-करकट में से अपना आहार ढूंढ लेती हैं।

रंग-रूप

घरेलू गौरैया पासेराडेई परवार की सदस्य है। कुछ लोग इसे वीवर फिंच परिवार से संबंधित भी मानते हैं। नर गौरैया को सीने के रंग के आधार पर पहचाना जा सकता है। पष्चिमी गोलार्ध की चिडिया उश्णकटिबंधीय दक्षिण एषियाई चिडिया की तुलना में बडी होती है। यह १४ से १६ सेमी. लंबी चिडिया है। इसके पंखों का फैलाव १९ से २५ सेमी. तक होता है। चहचहाने वाली इस चिडिया का वनज २६ से ३२ ग्राम होता है। नर गौरैया का सिर, गाल तथा अंदर का भाग धूसर होता है तथा सीने के ऊपर, गला, चोंच व आंखों के बीच का भाग काला होता है। गर्मी में गौरैया की चोंच का रंग नीला-काला तथा पैर भूरे रंग के हो जाते हैं। सर्दी में इसकी चोंच का रंग पीला भूरा हो जाता है। एक ऋतु में इसके कम से कम तीन बच्चे होते हैं।

प्रजनन

गौरैया के घोंसले घरों की सूराखों में, चट्टानों में, घर या नदी के किनारे, झाडियों में, आलों में या प्रवेष द्वारों पर होते हैं जो कि घास के तिनकोंसे बने होते हैं और उनमें पंख भरे होते हैं। कभी-कभार घरेलू गौरैया अन्य चिडियों के घोंसले भी हडप लेती हैं। कभी-कभी दूसरी चिडिया द्वारा बनाए गए घोंसलों के ऊपर ही अपना घोंसला बना लेती है। इनके अंडे अलग-अलग आकार के होते हैं। अंडों को सहने का काम मादा गौरैया के जिम्मे होता है। गौरैया १० से १२ दिनों तक अंडे सहती है जो सभी चिडियों की अंडे सेने की अवधि में सबसे छोटी है। गौरैया की प्रजनन सफलता उम्र बढने के साथ-साथ बढती जाती है और यह प्रजनन समय में परिवर्तन लाती है जिससे बडी चिडिया ऋतु से पहले अंडे देती हैं।

कहां देखा जा सकता है

पहले गौरैया को खेत-खलिहानों और हमारे घरों में देखा जा सकता था। लेकिन अब तो इन्हें देखे सप्ताह हो जाते हैं। ये मानव निर्मित एकांक स्थलों या दरारों में, बगीचों में अपना घोंसला बनाती हैं। कभी हमारे घरों में तिनका ला कर घोंसला बनाती थी। फुदकना, चुगना, फुर्ती, नृत्य करना, गर्दन घुमाकर और उठाकर देखना, चैकन्नापन गौरैया का गुण है।

कम होती गौरैया

आज गौरैया संकट में है। आज गौरैया की संख्या तेजी से कम हो रही है। और निकट भविष्य में इसके विलुप्त होने का खतरा बना हुआ है। आज घरों से गौरैया गायब होती जा रही है। भारत ही नहीं यूरोप के बडे हिस्सों में कभी सामान्य रूप से दिखाई देने वाली गौरैया अब काफी कम रह गई है। नीदरलैंड में तो घरेलू गौरैया को दुर्लभ प्रजाति के वर्ग में रखा है। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, चेक गणराज्य, इटली, फिनलैंड, बैल्जियम में गौरैया की संख्या में तेजी से गिरावट दर्ज की गई है।

गौरैया दिवस२० मार्च को सरकार ने गौरैया दिवस मनाने का फैसला लिया। नेचर फारएवर सोसायटी ने कई राश्ट्रीय अंतर्राश्ट्रीय संस्थाओं के सहयोग से इस दिवस को षहरों में गौरैया की कमी पर केंद्रित किया है ।

क्यों हो रही है गौरैया विलुप्त

आवास की कमी आज हमारे घरों में न तो आंगन होते हैं और न ही पिछवाडा। तो फिर चिडिया घोंसला बनाए तो बनाए कहां। आज तो हमारे यहां प्रकृति गमलों में या सार्वजनिक वातावरण में कैद सी हो गई हैं। आधुनिक युग में पक्के मकानों की बढती संख्या, लुप्त होते बाग-बगीचे भी इसके आवास स्थल को छीन रहे हैं।

भोजन की कमी गौरैया प्राय: दाना खाती है लेकिन उसके बच्चों को प्रोटीन के लिए नन्हे कीडे चाहिए होते हैं जिन्हें मां गौरैया ढूंढकर लाती है और उनके मुंह में अपनी चोंच से डालती है। पेडों पर चिडियों की बजाय दूसरे ताकदवर पक्षियों का कब्जा होता है। षहरों में आवास बढने और हरियाली की कमी के कारण चिडियों को कीडे-मकोडे अपने बच्चों की आवष्यक खुराक के लिए नहीं मिल पाते। मानवीय जीवनषैली में आए बदलाव के कारण गौरैया की संख्या कम हुई है। अब घरों में दालों को छतों पर नहीं डाला जाता। भोज्य प्रदार्थों की उपलब्धता में कमी गौरैया के कम होने का एक प्रमुख कारण है। मानवीय गतिविधियां आज कई मानवीय गतिविधियां इन नन्हीं सी जान के लिए खतरा बन गई हैं। मोबाइल फोन के टॉवर से निकलने वाली रेडियो तरंगे भी गौरैया के लिए बडी खतरनाक है। रेडियो तंरगों के प्रभाव से अण्डों के बाह्य आवरण पर नकारात्मक प्रभाव पड रहा है। इससे पक्षियों की इंद्रिय क्षमता भी कम हो रही है। भोजन की तलाश में निकली गौरैया रास्ता भटक जाती हैं। सीसा रहित पेट्रोल के उपयोग करने पर इसके दहन से मिथाइल नाइट्रेट नामक यौगिक बनता है जो छोटे जंतुओं के लिए काफी जहरीला है।

आओं करें इस नन्हें जीव का संरक्षण

हमें इन नन्हें जीव के संरक्षण के लिए वनों, झाडियों का संरक्षण करना होगा। और गर्मियों में पानी से भरे बर्तनों को छतों पर रखना चाहिए ताकि यह नन्हा जीव अपनी प्यास बुझा सके।

मलबरी रेशम कीट पालन

मलबरी रेशमकीट को विभिन्न जलवायु स्थितियों और विस्तृत क्षेत्र वाली मिट्टी में उगाया जा सकता है। बेहतर पद्धतियों को अपनाकर कोकुन की अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है। लेकिन इसके लिए अधिक ऊपज देने वाली उत्तम किस्म की पत्ती का होना आवश्यक शर्त है। रेशमकीट का पालन लार्वा अवधि के दौरान पाँच विभिन्न चरणों से होते हुए होती है। लार्वा अवधि में उसे विशेष रूप से निर्मित रेशमकीट पालन शेड में रखा जाता है। साथ ही, उच्च कोटि का रेशम प्राप्त करने के लिए उचित समय पर प्रबंध और गहन देखभाल की जाती है।

मलबरी कृषि और रेशमकीट पालन की सर्वोत्तम पद्धतियाँ

पूरे पालन अवधि के दौरान रेशमकीट को काफी सावधानीपूर्वक देखभाल की जाती है और उसके भोजन के लिए उत्तम किस्म के मलबरी पत्ते का इस्तेमाल किया जाता है। बेहतर वातावरण का निर्माण और कृमि व बीमारियों से रक्षा इनके पालन की अन्य आवश्यक शर्तें हैं। रेशमकीट के लिए अनुकूल स्थितियाँ प्रदान करने के लिए एक अलग से पालनघर और पालन उपकरण व साधनों की आवश्यकता होती है। एक साल में 5 से 10 फसलों का पालन किया जा सकता है और प्रत्येक फसल की जीवन अवधि लगभग 70-8० दिनों की होती है।

मलबरी कृषि

1.मलबरी प्रजाति

वी-१ और एस-36 उच्च ऊपज देने वाली मलबरी प्रजाति है और रेशमकीट पालन के लिए अत्यंत उपयुक्त है। ये दोनों प्रजाति पोषक पत्ती प्रदान करती हैं जो रेशमकीट पालन में लार्वा के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन दो प्रजातियों की विशेषताएँ निम्न हैं -

एस - 36 प्रजाति - इसकी पत्तियाँ हृदय आकार की मोटी और हल्के हरे रंग के साथ कौंतियुक्त होती हैं। पत्तियों में उच्च आर्द्रता होती है तथा उसमें अधिक पोषक तत्व होते हैं। प्रति वर्ष एक एकड़ में लगभग 15 हजार से 18 हज़ार किलो ग्राम मलबरी पत्तियाँ प्राप्त होती हैं।

वी -1 प्रजाति - यह प्रजाति वर्ष 1997 के दौरान जारी की गई और खेती में काफी लोकप्रिय है। पत्तियाँ अण्डाकार, बड़े आकार की, मोटी, आर्द्रता लिए हुए गहरे हरे रंग की होती है। एक वर्ष में लगभग 20-24 हज़ार किलो ग्राम मलबरी पत्तियाँ प्राप्त की जा सकती है।

२.रोपण पद्धति

वृक्षारोपण की व्यवस्था दो कतारों में की जाती है जहाँ (90/15० से.मी) X 90 से.मी या 60 से.मी X ६०से. मी. की दूरी उपयुक्त होती है। वृक्षारोपण की दोहरी कतार के लाभ इस प्रकार है-

-दोहरी कतार के बीच जगह होने से अंतर कृषि गतिविधि तथा पत्तियों के परिवहन हेतु पावर टिलर का उपयोग किया जा सकता है। इसके द्वारा ड्रिप सिंचाई सुविधा होती है।

-प्रति एकड अधिक संख्या में वृक्षों को लगाया जा सकता है।

-आसानी से एवं शीघ्रतापूर्वक पत्तियों को ले जाया जा सकता जो आर्द्रता हानि की संभावना को कम करता है।

-डंठल कटाई (शूट हार्वेस्टिंग) से 40 प्रतिशत तक श्रम की बचत होती है।

३.गोबर एवं खाद का प्रयोग

प्रति हेक्टेयर 8 मीट्रिक टन की दर से साल में दो बार गोबर का प्रयोग करें। मलबरी के वी-1 प्रजाति के लिए एनपीके का प्रयोग 350:140 :140 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से तथा मलबरी के एस-३६ प्रजाति के लिए 300 :120:120 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रति वर्ष 5 बराबर भागों में बाँट कर करें।

4.सिंचाई

सप्ताह में एक बार 80 से 120 मिली मीटर की दर से सिंचाई । पानी की कमी होने की स्थिति में किसान ड्रिप सिंचाई का प्रयोग कर 40प्रतिशत पानी की बचत कर सकते हैं।

रेशमकीट पालन

1.संकरित रेशमकीट

आईवीएलपी के अंतर्गत सीएसआर-2X सीएसआर-4 एवं द्विगुण संकरित (कृष्ण राजा) जैसे उन्नत बाइवोल्टाइन संकरित रेशमकीट की सिफारिश की गई है।

2.चावकी पालन

अण्डे के फूटने से लेकर परिपक्व अवस्था तक पहुँचने में एक रेशम कीट को पाँच अवस्थाओं से गुजरना पडता है। कीटों की दूसरी अवस्था युवा अवस्था या चावकी अवस्था कहलाती है। चूँकि यह प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति अधिक संवेदनशील होते और इसके संक्रमित होने की संभावना अधिक रहती इसलिए चावकी पालन हेतु विशेष ध्यान देने की जरूरत है। अतएव चावकी पालन केन्द्रों में निर्देशित परिस्थितियों के भीतर पले रेशमकीट प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

३.बड़े उम्र में पालन

बड़े उम्र के कीटों का पालन तीसरे इनस्टार से शुरू होती है। ये कीड़े बहुत अधिक पत्तियाँ खाने वाले होते हैं।

4.पालन घर

मलबरी रेशमकीट पालन एक पूर्णत: घरेलू व्यवसाय है। इसके लिए 24-28 डिग्री सेल्सियस के बीच तापमान और 70-80 प्रतिशत आर्द्रता वाले मौसम की जरूरत होती है। इसलिए किफ़ायती ठंड वातावरण बनाये रखने के लिए दीवार व छत की बनावट के लिए उपयुक्त सामग्री का चयन,भवन का अभिसरण, निर्माण पद्धतियाँ, डिज़ाइन इत्यादि पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। आगे, पत्तियों की रख-रखाव, चावकी पालन, परिपक्व अवस्था पालन एवं मोल्टिंग के लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध होनी चाहिए। साथ ही, उस स्थान की साफ-सफाई और रोगमुक्तीकरण व्यवस्था भी अच्छी तरह होनी चाहिए। पालन के प्रकार और मात्रा के अनुसार पालन घर का आकार होनी चाहिए। १०० डीएफएल के लिए ४०० वर्ग फीट क्षेत्रफल वाला सतह प्रदान किया जा सकता है (डीएफएल- डिज़िज फ्री लेइंग (रोग मुक्त स्थान), १डीएफएल / ५०० लार्वा)।

५.पालन उपकरण

परिपक्व अवस्था वाले रेशमकीट उच्च तापमान,उच्च आर्द्रता और न्यूनतम स्तर वाले हवा के आवागमन व्यवस्था को सहन नहीं कर पाते हैं। इसलिए कमरे के तापमान को न्यूनतम स्तर पर बनाये रखने के लिए पालन घर में दो ओर से हवा के आने व जाने की व्यवस्था होनी चाहिए ताकि रेशमकीट द्वारा छोड़े गये मल से उत्पन्न बड़ी मात्रा में गैस आसानी से बाहर निकल सके। १०० डीएफएल (50 हजार लार्वा) के लिए न्यूनतम उपकरण आवश्यकता को निम्न तालिका में दर्शाया गया है -

सारणी- १०० डीएफएलएस (50 हजार लार्वा) पालन हेतु अपेक्षित पालन उपकरण

क्रम संख्या	सामग्री	मात्रा
1	शूट पालन रैक (40/ गुणे 5)	5 स्तरीय 01
2	रोटरी माउंटेजेज या चंड्राइक	35
3	पॉवर स्प्रेयर	01
4	आर्द्रतामापी	01

पोषण 50-55 दिन पुराने शूट का पोषण प्रारंभ करें। इसकी कटाई सुबह के ठण्डे मौसम में 3-4 फीट की ऊँचाई पर करें। 60-65 दिन पुराने शूट का पोषण पाँचवीं अवस्था वाले कीटों के साथ की जानी चाहिए। कटाई की गई शूट का भंडारण ढीले में उर्ध्वाकार अवस्था में ठण्ड और आर्द्रता युक्त वातावरण में करनी चाहिए जो साफ, रोगाणुमुक्त एवं गीले कपड़े से ढके हुए हों। बाई वोल्टाईन रेशमकीट के लिए चौथे अंतर्पू में 460 कि.ग्राम और पाँचवें अंतर्पू में 2880 कि.ग्राम मलबरी मंजरी के मात्रा की आवश्यकता होती है। प्रतिदिन ३ बार भोजन देने (सुबह 6 बजे, दोपहर 2 बजे और रात 10 बजे) की सारणी को अपनाया जाना चाहिए। मटमैले या अधिक पके हुए पत्तियों को न खिलाएँ. प्रत्येक पोषण के दौरान बेड में लार्वा को समानांतर रूप में वितरित करें। पाँचवीं अवस्था के अंत में 100 डीएफएलएस के लिए 600 वर्ग फीट की जगह की आवश्यकता होती है। प्रत्येक सफाई/ पोषण से पहले चॉप स्टीक से ध्यानपूर्वक सभी छोटे आकार वाले और बीमारी की आशंका वाले कीड़ों को हटा दें।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Bio Insecticide
- Mixture
- Bactericide
- Secondary Nutrients
- Wetting Agent
- Growth Promoters
- Zyme
- Bio Stimulants
- Tonic
- Bio Fungicide

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

सितम्बर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- गाय व भैंस को ताव में आने के 12 से 18 घन्टे के अन्दर गाभिन करवाने का उचित समय है।
- दुधारु पशुओं में थैनेला रोग से बचाव के उपाय करें।
- पशुओं को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशु–चिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- बरसीम की बिजाई इस माह के अन्तिम सप्ताह शुरू करें।
- बरसीम की पहली काट से अधिक चारा लेने के लिए सरसों की (चाइनीज कैबिज) किस्म या जई मिलाकर बिजाई करें।
- बरसीम के साथ राई घास मिला कर बिजाई करने से हरे चारे की पौषक्ता व उपज में वृद्धि होती है।
- बरसीम फसल से अधिक उपज व लम्बी अवधि (मध्य जून) तक हरा चारा प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्में BL-10, BL-22 व BL-42 की बिजाई करें।
- बरसीम की बिजाई नये खेत में करनी हो तो बीज को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करने पर अधिक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।
- बैल बनाने के लिए छः मास की आयु होने पर बछड़े को बधिया करवायें।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को 56,000 कर्मचारियों की जरूरत

नई दिल्ली: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में विभिन्न कैडर के ५६,०२२ कर्मचारियों की कमी है और बैंक इन पदों पर नियुक्तियों के विभिन्न चरणों में है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि सार्वजनिक क्षेत्र के २५ बैंकों में अधिकारी श्रेणी में २३,७९४ रिक्तियां मार्च, २०१३ तक थीं। इनमें से ५,८१५ रिक्तियां तो बैंक ऑफ बड़ौदा में ही हैं। सिंडिकेट बैंक में अधिकारी स्तर के १५०० पद रिक्त हैं।

इसी तरह, आंध्रा बैंक में अधिकारी स्तर की १४८४, बैंक ऑफ इंडिया में १४७३, इलाहाबाद बैंक में १४५०, पंजाब एंड सिंध बैंक में १४५४ तथा पंजाब नेशनल बैंक में अधिकारी स्तर की १११९ रिक्तियां हैं।

सूत्रों ने बताया कि एसबीआई के पांच सहयोगी बैंकों सहित विभिन्न बैंकों में कलर्क स्तर की कम से कम २२,३४७ रिक्तियां हैं। बैंक ऑफ बड़ौदा में इस श्रेणी में सबसे अधिक ३,६१५ रिक्तियां हैं। इसके बाद इलाहाबाद बैंक में २६२७, स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर में २५००, पंजाब नेशनल बैंक में लगभग २२०० तथा बैंक ऑफ इंडिया में १४६८ रिक्तियां हैं। ये आंकड़े २०१२-१३ के आखिर तक के हैं। वहीं उपकर्मी या सब स्टाफ स्तर पर सार्वजनिक बैंकों में लगभग ९८८१ पद रिक्त हैं।मौजूदा वित्त वर्ष में सार्वजनिक बैंकों में लगभग ५०,००० कर्मचारी रखे जाने हैं। वित्तमंत्री पी चिदंबरम ने जून में पीएसयू बैंकों के प्रमुखों के साथ बैठक के बाद कहा था, इस साल सार्वजनिक बैंक १०,००० नई शाखाएं खोलेंगे। इसको देखते हुए भर्ती भी होगी। कुल मिलाकर बैंक मौजूदा वित्तवर्ष में ५०,००० नियुक्तियां करेंगे।

बैंक प्रमुखों से विचार-विमर्श के बाद विदेशी निवेशकों से चिदंबरम की मुलाकात

मुंबई: वित्तमंत्री पी चिदंबरम ने बैंकों के शीर्ष अधिकारियों के साथ बैठक की। बंद कमरे में हुई इस बैठक में रुपये की विनिमय दर में भारी उतार-चढ़ाव से उत्पन्न स्थिति की समीक्षा की गई।

वित्तमंत्री ने बैठक के बाद वहां संवाददाताओं से कोई चर्चा नहीं की। समझा जाता है कि बैठक में चालू खाते के घाटे के लिए पूंजी की व्यवस्था के उपायों पर भी चर्चा की गई। इसके बाद चिदंबरम ने कुछ विदेशी संस्थागत निवेशकों से भी मुलाकात की। चालू खाते के घाटे (कैड) के लिए वित्त का प्रबंध करने में विदेशी संस्थागत निवेश को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। बैंकों के साथ बैठक में वित्तमंत्री के साथ आर्थिक मामलों के सचिव अरविंद मायाराम और वित्तीय सेवा सचिव राजीव टकरू भी शामिल हुए। बैठक में भारतीय स्टेट बैंक के प्रतीप चौधरी, आईसीआईसीआई बैंक की चंदा कोचर, एचडीएफसी बैंक के आदित्य पुरी, सिटी ग्रुप इंडिया के प्रमीत झावेरी, बैंक ऑफ इंडिया की विजय लक्ष्मी अय्यर, केनरा बैंक के आरके दुबे और स्टैंडर्ड चार्टर्ड इंडिया के अनुराग अदलखा और कुछ अन्य बैंकों के प्रमुख भी शामिल हुए। बैठक के बाद आईसीआईसीआई बैंक की प्रमुख कोचर ने संवाददाताओं से कहा, बैठक मुख्य रूप से यह विचार-विमर्श करने के लिए था कि पूंजी प्रवाह को लेकर क्या किया जा सकता है। बैठक बहुत अच्छी और सकारात्मक रही। भारतीय स्टेट बैंक के चेयरमैन चौधरी से पत्रकारों ने जब पूछा कि क्या वित्तमंत्री ने कोई निर्देश दिया है, तो उन्होंने कहा, कोई निर्देश नहीं दिया गया। केवल विचार-विमर्श किया गया।

अर्थव्यवस्था की बर्बादी के लिए सरकार जिम्मेदार-गुरूदास गुप्ता

नई दिल्ली। विपक्ष ने देश की मौजूदा आर्थिक संकट के लिए कांग्रेस नीत यूपीए सरकार की गलत नीतियों को सीधे तौर पर जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि जब से भारतीय अर्थव्यवस्था को अमेरीका का पिछलग्गू बनाया गया तब से आर्थिक संकट शुरू हुआ है। लोकसभा में नियम 193 के तहत देश में आर्थिक स्थिति पर चर्चा की शुरूआत करते हुए भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गुरूदास गुप्ता ने कहा कि सरकार देश की वित्तीय खास्ताहाली के प्रति न तो गंभीर है और न ही कोई ठोस कदम उठाना चाह रही है इसके बजाय वह या तो अमेरीका की ओर या आसमान की ओर देख रही है।

उन्होंने कहा कि हमारे देश में कायम भयानक आर्थिक संकट से उबारने के लिए अमेरीका आगे नहीं आएगा बल्कि सरकार को खुद आगे आना होगा और अपने दम पर विभिन्न क्षेत्रों में निवेश को बढ़ाना होगा। उन्होंने मौजूदा संकट को आर्थिक सुनामी की संज्ञा देते हुए कहा कि आज रुपये का अवमूल्यन हो रहा है। बाजार में हाहाकार है। लोगों को नौकरियों से निकाला जा रहा है। कीमतें आसमान छू रही हैं और हर क्षेत्र में वित्तीय घाटा बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आम आदमी के नाम पर सरकार चलाने वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने आम आदमी को बर्बादी के कगार पर पहुंचा दिया है। उन्होंने कहा कि आज जो संकट पैदा हुआ है वह 1991 की आर्थिक मंदी की तरह भयानक है

रूपया क्यों गिरा ?

नई दिल्ली। देश की मुद्रा रुपया पिछले कुछ दिनों से रोजाना डॉलर के मुकाबले नया-नया ऐतिहासिक निचला स्तर छूता जा रहा है। इस साल इसका अब तक १६ फीसदी अवमूल्यन हो चुका है। विशेषज्ञों के मुताबिक रुपये के रोजाना हो रहे अवमूल्यन के १० कारण इस प्रकार हैं:

बढ़ता चालू खाता घाटा: इसके कारण डॉलर और अन्य परिवर्तनीय मुद्राओं की वास्तविक और काल्पनिक मांग बढ़ती जा रही है। नीतिगत गतिरोध: नीतिगत मोर्चे पर अस्पष्टता की छवि बनने के कारण भी विदेशी मुद्राओं की काल्पनिक मांग बढ़ रही है। अस्पष्टता का आलम यह है कि भारतीय रिजर्व बैंक ने एक दिन कहा कि वह तरलता घटाएगा, जबकि एक अन्य दिन उसने कहा कि वह बाजार में एक अरब डॉलर तरलता का संचार करेगा।

विदेशी पूंजी भंडार का छोटा आकार: देश का विदेशी पूंजी भंडार सिर्फ सात महीने के आयात का खर्च उठा सकता है। हाल के महीने में इसमें गिरावट आई है। भंडार छोटा होने के कारण रिजर्व बैंक आक्रामक रूप से मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। आर्थिक विकास दर कम रहना: देश की आर्थिक विकास दर 2012-13 में घटकर पांच फीसदी दर्ज की गई। इस साल स्थिति में अधिक सुधार की उम्मीद नहीं है। विकास दर कम रहने के कारण विदेशी निवेशक भारतीय बाजार से पैसा निकाल रहे हैं। विदेशी धन पर निर्भरता: पिछले कई सालों से देश के चालू खाता घाटे का वित्तीयन विदेशी धन से हो रहा है। विदेशी निवेशक द्वारा पैसे निकाले जाने से रुपये में कमजोरी आ रही है। अमेरिका में तेजी: अमेरिका में धीमे-धीमे आर्थिक स्थिति ठीक होने के कारण डॉलर अन्य मुद्राओं के मुकाबले मजबूत हो रहा है।

प्रोत्साहन की वापसी: अमेरिका में मंदी के बाद कुछ सालों से जारी वित्तीय प्रोत्साहन पैकेज के समाप्त किए जाने या कम किए जाने के संकेत से विकासशील अर्थव्यवस्था को मिल रही पूंजी रुक सकती है। पूंजी नियंत्रण: भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार द्वारा पूंजी प्रवाह को कुछ के फैसले का बाजार पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ा है, क्योंकि इससे भारतीय कंपनियां विदेशी निवेश से हतोत्साहित होंगी और विदेशी कंपनियां भी भारत में पूंजी लगाने से हतोत्साहित होंगी। अन्य बाजारों की चाल: रुपये की चाल ब्राजील, इंडोनेशिया, रूस और दक्षिण अफ्रीका जैसी अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं में भी मुद्राओं की चाल के जैसी है। सटोरिया कारोबार: मुद्रा बाजार में सटोरिया कारोबार का भी रुपये पर दबाव बन रहा है।

रिलायंस का कृषि बीमा कारोबार में पहला कदम

दिल्ली रिलायंस जनरल इंश्योरेंस, जो रिलायंस कैपिटल का एक हिस्सा है, जो भारत के २१ राज्यों में मौसम आधारित फसल बीमा (ॅण्इ) योजना को लागू करने के लिए कृषि बीमा कारोबार में उतरा हैं इसके तहत वह फसलों को मौसमी अनिश्चितताओं के लिए वित्तीय सरंक्षण से जुड़े उत्पादों की पेशकश करेगों

रिलायंस जनरल इंश्योरेंस के सीईओ राकेश जैन ने बताया कि घरेलू कृषि बीमा क्षेत्र में यह हमारा पहला कदम हैं यह बीमा योजना उत्पादों सेकिसानों को मौसमी अनिश्चितताओं से होने वाली दिक्कतों से संरक्षण के लिए तैयारकिया गया है। उन्होंने कहा कि हमें विश्वास है कि कृषि बीमा से उन किसानों को राहत मिलेगी जो बदलते मौसमी हालात तथा फसलों पर उसके असर को लेकर चिंतित रहते हैं। कंपनी ने सम्बद्ध राज्य सरकारों की मंजूरी मिलने के बाद पांच राज्यों में कृषि बीमा योजना शुरू की है। इस योजना में किसानों द्वारा चुकाये जाने वाले प्रीमियम को राज्य तथा केंद्र सरकार सब्सिडी देते है। रिलायंस ने यह योजना बिहार, हरियाणा, असम, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में आरंभ कर दी हैं कंपनी को राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना (एनएआईएस) के तहत ५० जिलों में किसानों को उपज आधारित फसल संरक्षण बीमा योजना पेशकरने की अनुमति दी गई है।

राज्यों ने की पवार की सलाह की - अनसुनी

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने शुक्रवार को कहा कि राज्यों ने प्याज भंडारण के बारे में कुछ महीने पहले कृषि मंत्री शरद पवार की सलाह पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि इस सलाह को माना जाता तो प्याज की कीमतों को और स्थिर बनाये रखने में मदद मिलती। सिंह के अनुसार, जैसा शरद पवार ने ज्रिक किया कि उन्होंने कुछ महीने पहले कृषि मंत्री के रूप में सभी राज्यों को सलाह दी थी कि वे प्याज के लिए भंडारण की व्यवस्था करें। फिर भी किसी राज्य सरकार ने इसका लाभ नहीं उठाया।

उन्होंने कहा कि अगर उन्होंने कम मांग वाले (लीन) सीजन का फायदा उठाया होता तो कीमतें और अधिक स्थिर होती। सिंह ने कहा कि प्याज की कीमतें ऐसी कीमतें है जिनमें उतार-चढ़ाव उत्पादन में मौसमी मांग पर निर्भर करता है।

कोई भी केंद्र सरकार यह नहीं कह सकती कि वह सभी चीजों की कीमत नियंत्रित कर लेगी। इस बीच कृषि राज्यमंत्री तारिक अनवर ने राज्यसभा में लिखित जवाब में कहा कि प्याज सहित सब्जियों का मासिक थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) जुलाई में बढ़ कर ३३७.३ अंक हो गया जो इस साल जनवरी में १९१ था। प्याज डब्ल्यूपीआई जनवरी में ३४० था जो जुलाई २०१३ में ४४२.६ हो गया।

हिंदकेम कारपोरेशन का प्रचार अभियान पिछले दिनों

जयपुर : हिंदकेम कारपोरेशन मुंबई द्वारा किसान रथ चलाकर हडौली शेत्र में प्रचार अभियान चलाया गया ॅ कंपनी के प्रतिनिधि कौशल किशोर गौतम ने कंपनी के उत्पाद 'सरदार जी' के बारे में जानकारी देते हुए बताया था ,की सरदार जी हिंदकेम कारपोरेशन का उत्कृष्ट उत्पाद है जो कॉ धन तथा सोयाबीन की फसलों में उत्पादन बदने में बहुत ही लाभकारी हैं यह दानेदार तथा तरत रूप में उपलब्ध हैं

कई किसानों ने जो 'सरदार जी ' का उपयोग करते रहे है ने बताया इसके उपयोग से हमें बहुत लाभ पंहुचा हैं अजीनग्यास के सोहन लाला ने बताया की उनके बाग में पीले पन तथा सूखाने की समस्या थी मैने इस बार जनवरी–फरवरी मे हिन्द कैम कॉरपोरेशन की खाद एस. सरदार. जी खाद पौधे में डाली जिसके फल स्वरूप मुझे इन दोनों बीमारी से निजात मिली और इसबार फल भी पहले की अपेाा अधिक है। इसी के साथ दुसरे किसान चौधरी सुनील कुमार जो की धरमपुरा के रहने वाले है ने बताया की यहाँ किन्नू की फसल अधिक है इसमें मेन बिमारी किन्नू को एक साल फल अधिक आना और दूसरे साल बिलकुल नही आना । इस साल मेरी फसल मे यह दिया होनी थी तो मैने हिन्द कैम कॉरपोरेधन की दवाई एस.सरदार जी लिक्वेड का स्प्रे किया जिस के फलस्वरूप मेरी किन्नू की फसल में फल अधिक आया है अथ्वा फल का गिरना भी बहुत कम है और मै एस.सरदार जी दानेदार भी इस्तेमाल करता हूठ। इसी के साथ ही राजस्थान के रहने वाले दलतेज सिंह ने बताया की मेरे ग्व्ट ३३ एकड़ बिजाई थी उसमे मैने पहले पानी पर हिन्द कैम कॉरपोरेधन कम्पनी का एस.सरदार जी दानेदार + 20 किलो ग्राम यूरिया के साथ डाला था । मेरी गेहूठ की फसल में ज्यादा शाखाऐं और ग्रोथ हुई जिस के फल स्वरूप मेरे गेहूठ का झाड़ 5 से 7 मन प्रति एकड़ बढ़ा है। मै पिछले एक साल से ये खाद अपनी फसल में लगाताार डाल रहा हूठ ।

एक सपने की उडान- दीपक फर्टीलाईजर्स

(सतीष नरतम)

आपके कंपनी का मुख्य उद्देश क्या है ?

दीपक फ़र्टीलाईजर्स का मुख्य उद्देश किसान भाइयों को कृषि की नई तकनीकी से अवगत करना एव समन्वित पोषण प्रबंधन करने वाली महत्वपूर्ण कंपनी होना हैं

आप इस कम के प्रति कैसे प्रेरित हुए ?

साथ के दशक में हमारे देश में हरित क्रांति की शुरुआत हुई जिसके फलस्वरूप हम खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हुऐं परंतु सघन कृषि के कारण बढ़ी उत्पादकता के अनुरूप फसलों को पोषण तत्वों का संतुलित पोषण न मिल पाने के कारण भूमि के पोषक तत्व का भण्डार का दोहन का सिलसिला चालू हुआ प्रमुख पोषक तत्वों के साथ ही गौण एव सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी बड़े पैमाने पर देखी जाने लगी और फसलों की उत्पादकता में पूर्ण ठहराव की स्तिथि उत्पन्न हुईं भूमि के पोषक तत्व भण्डार के अनवरत दोहन और उर्वरकों के असंतुलित योग के कारण उर्वरकों की क्षमता पर प्रभाव पड़ने लगां हमारी कृषि -उत्पादकता दुसरे देशों की तुलना में दुर्भाग्यवश बहोत कम है ॅ इन सभी बातो से प्रेरित होते हुए दीपक फ़र्टीलाईजर्स के चेअरमेन तथा मैनेजिंग डायरेक्टर श्री .सैलेश मेहता ने समन्वित पोषण प्रबंधन पर ध्यान देते हुए महाधन महापॉवर 24:24 :0,चेतक (डीएपी),महाधन पोटाश (एम् ओ पी),महाधन सल्फेट (अमोनिएम सल्फेट),महाधन बेनसल्फ़ (बेन्तोनाईट गंधक),मैग्नेशियम सल्फेट,महाधन क्रांति (सूक्ष्म पोषक तत्व), महाधन अमृता (घुलनशील एनपीके खाद) तथा नई तकनीकी द्वारा बनाई गई

विजयराव पाटील

कार्बनिक खादों महाधन ऑरगणीक एव महाधन नाचुरल खादों को किसान भाइयों की सेवा में प्रस्तुत किया है, जिससे समन्वित पोषण से किसान भाइयों की प्राति इकाई उत्पादकता में वृधि होगी यह विश्वास हैं

भविष्य में आपकी कंपनी देश के विकास में कैसे सहायक सिद्ध होगी?

किसान भाइयों को नई नई कृषि तकनीकी से अवगत करके समन्वित पोषण प्रबंधन के आधार पर भारतीय किसानों की दर इकाई उत्पादकता मै वृद्धी संभव हैं इसी आधार पर दीपक फ़र्टीलाईजर्स आगे बाद रही हैॅ दी फ़र्टीलाईजर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया (पश्चिम विभाग),मुंबई द्वारा अंगीकृत ' फसल उत्पादकता वृद्धी अभियान परियोजना सन२००८से शुरू हुई जिसमें जिसमें विभिन्न खाद कंपनीद्वारा किसान भाइयों के खेत पर कृषि नई तकनीक एवं एकीकृत पोषण प्रबंधन आधार पर विभिन्न फसलोंपर प्रदर्शन किएं जिसमे दीपक फ़र्टीलाईजर्स को आजतक चौथीबार 'फसल उत्पादकता में वृद्धी एवं कृषि विस्थारिकरण के लिए महाधन एवोर्ड से सन्मानित किया गया हैॅ कंपनीद्वारा नई नई कृषि तकनीक एवं समन्वित पोषण प्रबंधन से भारतीय किसान भाइयों की प्रति इकाई उत्पादकता में वृद्धि होगी जिससे देश की प्रति इकाई उत्पादकता में वृद्धि होकर खाद्यान्न सुरक्षा बढ़कर देश का विकास होगा और यही देश के प्रति दीपक फ़र्टीलाईजर्स का महत्वपूर्ण योगदान होगों

-ममता म्हात्रे

पाक्षिक राशी फल
अगस्त–2013

(पं.महेन्द्र दाधीच)

मेष :अस्वस्थता, मानसिक चिन्ता, खर्च की अधिकता तथा व्यर्थ दौड़–धूप से मन विचलित होगा। तारीख 23, 24 शुभफलों में कमीकारक रहेगी।

वृष :पूर्व नियोजित योजनाओं का क्रियान्वयन होने से खर्च की अधिकता रहेगी पराक्रम पुरूषार्थ में वृद्धि होने से उद्योग धन्धो में प्रगति होगी। तारीख 25, 26, 27 सावधानी से व्यतीत करने वाली बनी है।

मिथुन :व्यापार की उलझने दूर होती नजर आयेगी। सामाजिक मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी करने वालों को पदोन्नति मिलने की संभावना है। तारीखें 28 व 29 अशांतिपद रह सकती है।

कर्क :धन संचय में कमी होगी। व्यापारिक स्थिति उत्तम होने से धन लाभ हो सकता है। अपनों से सहयोग मिलेगा किन्तु शत्रु बने रहेगें। तारीखे 21, 22, 30, 31 सावधानी से व्यतीत करने की बनी है।

सिंह :हर्ष विषाद के कारण कुछ समय तक मन में बैचेनी, उद्विग्नता तथा अस्थिरता बनी रहेगी। बुद्धि भ्रमता से नुकसान हो सकता है। दौड़–धूप से शरीर में कमजोरी रहेगी। तारीखे 23, 24 अशान्तिप्रद रह सकती है।

कन्या :सत्पुरूषो के सद्विचारो से मन में शान्ति बनी रहेगी। व्यापार में लाभ किन्तु दौड़ धूप की अधिकता रहने की संभावना है। यात्रादि से कष्ट व खर्च की अधिकता रहेगी तारीखें 25, 26, 27 कष्टकारक रहेगी।

तुला :व्यापारिक स्थिति मध्यम रहने से लाभ में कमी आयेगी। शत्रु कमजोर होगे। आप की तुलना में व्यय अधिक होने से आर्थिक परेशानी का सामना पड़ सकता है। तारीखें 28, 29 अशान्तिप्रद रह सकती है।

वृश्चिक : भाग्य फल उत्तम रहने से व्यवसाय में प्रगति होगी। किसी भी कार्य को प्रारंभ करेगे तो सफलता मिलेगी। कुटुम्ब एवं वाहनादि सुख की वृद्धि, पित् संचित लाभ, आमोद प्रमोद से मन प्रसन्न रहेगा। फिर भी 22, 30, 31 तारीखें सावधानी से व्यतीत करने की बनी है।

धनु :वाहनादि से चोट भय रहने के कारण मन अशांत रहेगा। उच्चाधिकारियो के परामर्श से नये कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। तारीखे 23, 24 अशांतिप्रद रह सकती है।

मकर :मेहमान के आने से खर्च में वृद्धि होगी । राजकीय कामों मे रूकावटें उत्पन्न होने स दौड़धुप अधिक करनी पड़ेगी। तारीखें 25, 26, 27 कष्टकारक रहेगी।

कुम्भ :आत्मबल में वृद्धि तथा स्वविवेक से निर्णय लेने की क्रमता का विकास होगा कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहेगे तो परिश्रम का सुखद परिणाम प्राप्त होगा। तारीखे 24, 25, 26 शुभफलो में कमीकारक रहेगी।

मीन :सामाजिक प्रतिष्ठा व सम्पर्क में वृद्धि होगी। छिपे हुये विरोधियो पर नियन्त्रण प्राप्त होगा। पत्नी के परामर्श से लाभ प्राप्त होगा। सत्पुरूषों से मिलन होगा। नवीन कार्य योजना बनेगी। तारीखे 21, 22, 30 व 31 सावधानी से व्यतीत करने की बनी है।

वैदिक विद्या ज्योतिष पर आधारित
राशि फल के गणित कर्त्ता व लेखक
पं. महेन्द्र कुमार दाधीच

पर्यावरण और त्यौहार

हमारा देश ऐसा अनोखा देश होगा जहां सबसे अधिक उत्सव व त्यौहार मनाए जाते होंगे। असल में धर्मों, र्समुदायों एवं विचारों की बहुलता के कारण यह देश उत्सवप्रधान देश बन गया है।

वैसे सदियों से त्यौहारों को पर्यावरण से जोड़ा जाता रहा है क्योंकि पर्यावरण के प्रति श्रद्धा उसे स्वच्छ बनाए रखने में योगदान देती थी। आज हम जानते हैं कि नदी, हवा और जंगल इन तीनों का सम्मान जीवन की निरंतरता और निरोगता के लिए भी आवष्यक है। लेकिन विगत कुछ सालों से त्यौहारों के कारण पर्यावरण पर गंभीर असर पड़ने लगा है।

हमें पता भी नहीं होता और हम धार्मिक क्रियाकलापों के द्वारा पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं। पूजा-पाठ और विभिन्न धार्मिक कर्मकांड़ों के दौरान निकलने वाली फूल-मालाएं, यज्ञ की भस्म व अन्य सामग्रियों को जल स्त्रोतों में डाल कर हम उन्हें प्रदूषित कर रहे हैं। मूर्ति स्थापित किए जाने वाले त्यौहारों, जैसे गणेश पूजा और दूर्गा पूजा के दौरान तो हम बड़े पैमाने पर पर्यावरण की शुचिता को दरकिनार कर देते हैं। मुर्तियों के निर्माण में प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के रासायनिक रंग-रोगनों से बाद में पानी विशैला हो जाता है। इसी तरह आजकल देव प्रतिमाओं में प्लास्टर ऑफ पेरिस के अलावा तांबा, क्रोमियम व निकल जैसी भारी धातुएं उपयोग की जाती हैं। और जब इन प्रतिमाओं को नदी, तालाबों, झीलों या अन्य जल स्त्रोतों में प्रवाहित किया जाता है तो वहां का पानी प्रदूषित हो जाता है।

इसके लिए धार्मिक कर्मकांडों में इको-फ्रेंडली यानी प्रकृति मित्र तरीकों को अपनाया जाना चाहिए। जिसके तहत मूर्तियों को बनाते समय केवल मिट्टी का ही प्रयोग करना चाहिए। हालांकि कुछ जगहों पर ऐसा किया जा रहा है लेकिन इस दिषा में अभी बहुत प्रयास करने हैं ताकि पर्यावरण और त्यौहारों की षुचिता, समाज में भाईचारे का विकास कर जनमानस को निरोगी और तरो-ताजा रख सके।

गणेश चतुर्थी

हिन्दू पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष भाद्रपद मास के शुक्ल चतुर्थी को हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार गणेश चतुर्थी मनाया जाता है. गणेश पुराण में वर्णित कथाओं के अनुसार इसी दिन समस्त विघ्न बाधाओं को दूर करनेवाले, कृपा के सागर तथा भगवान शंकर और माता पार्वती के पुत्र श्री गणेश का आविर्भाव हुआ था. भगवान विनायक के जन्मदिवस पर मनाया जानेवाला यह महापर्व महाराष्ट्र सहित भारत के सभी राज्यों में हर्सोल्लास पूर्वक और भव्य तरीके से आयोजित किया जाता है. इस महापर्व पर लोग प्रात: काल उठकर सोने, चांदी, तांबे अथवा मिट्टी के गणेश जी की प्रतिमा स्थापित कर षोडशोपचार विधि से उनका पूजन करते हैं. पूजन के पश्चात् नीची नज़र से चंद्रमा को अर्घ्य देकर ब्राह्मणों को दक्षिणा देते हैं. इस पूजा में गणपति को २१ लड्डुओं का भोग लगाने का विधान है.

जो तुमको हो पसंद वोही बात कहेंगे,
तुम दिन को अगर रात कहो तो रात कहेंगे,
क्यूंकीह्न ह्न 'पागलो से बहस नही की जा सकती

लोग कहते हैं की खुदा ने आपको बड़ी फ़ुर्सत में बनाया हैह्न ठीक ही कहते हैं, फालतू काम फ़ुर्सत में ही तो किए जाते हैं.

पत्नी - अजी, यह जो आप पैंट बार-बार ऊपर खींचते हो, वह बहुत बुरा लगता है.
पति - मेरा खयाल है अगर मैं पैंट ऊपर न खींचूं तो और भी बुरा लगेगा.

हाथी ने चींटी को प्रपोज किया चींटी ने कहा: मैं भी तुम से प्यार करती हूं।हाथी: तो फिर शादी से क्यों मना करती हो।चींटी: मैं तुम से कितनी बार कह चुकी हूं! मेरे घर में इंटर कास्ट शादी तो हो सकती है लेकिन इंटर साइज नहीं।

पप्पू: पापा मैं फिर से फेल हो गया! पापा: चिंता मत करो तुम शेर के बेटे हो! पप्पू: हां पिता जी मैडम भी यही कहती है पता नहीं किस जानवर की ओलाद है!

यह खास तरीके आपको अरबपति बना देंगे !

ज्यादा धन पाने की चाह हर इंसान के मन में होती है। इसके लिए मां लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है। हम आपके लिए लेकर आए हैं, कुछ आसान और सरल उपाय। जिनको अपनाकर आप आसानी से धन प्राप्ति कर सकते हैंह्न

money earning tips in hindi

इन्द्रकृत महालक्ष्मी स्तोत्र के ११ पाठ नित्य करने और गीताजी के ग्यारहवें अध्याय का नियमित पाठ करने से महालक्ष्मी उस घर में सदा निवास करती है।

श्रीसूक्त के रात्रि के समय ११ पाठ करने व एक पाठ से हवन करने से मां लक्ष्मी उस पर सदा प्रसन्न रहती है।

सफेद अकाव की जड़ सफेद कपड़े में बांधकर घर में रखने से समृद्धि बढ़ती है।

मां लक्ष्मी के प्रिय श्रीयंत्र को अमृत सिद्धि या सर्वार्थ सिद्धि योग में अष्टगंध/कपूर/घी के मिश्रण से भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर पूजन कर तिजोरी में रखने से स्थायी धन की प्राप्ति होती है।

Tags: money earning tips, money earning tips in hindi, money mantra, money mantra in hindi, धन मंत्र, धन कमाने के उपाय, धन मंत्रा

अपने बोल्ड अंदाज के लिए हमेशा सुर्खियों में रहने वाली अभिनेत्री मल्लिका शेरावत जल्दी ही शादी के बंधन में बंधने के मूड में लग रही हैं। मल्लिका झीलों की नगरी उदयपुर में अपने सपनों का राजकुमार तलाश करेंगी।

खाना खजाना

मोदक (Steamed Dessert Dumplings) महाराष्ट्र में खाया जाने वाला, गणेश जी का प्रिय व्यंजन है. महाराष्ट्र में, गणेश पूजा के अवसर पर मोदक (ंग्म स्र्द्दे) घर घर में बनाया जाता है. मोदक बनाने में घी तो लगता ही नही इसलिये आप इसे जितना चाहें उतना खा सकते हैं.

आवश्यक सामग्री - घ्हीुगहे र्दे श्र्द्दे
-चावल का आटा - २ कप
-गुड़ - १ .५ कप (बारीक तोड़ा हुआ)
-कच्चे नारियल - २ कप (बारीक कद्दूकस किया हुआ)
-काजू - ४ टेबल स्पून (छोटे छोटे टुकड़ों में काट लीजिये)
-किशमिश - २-३ टेबल स्पून
-खसखस - १ टेबल स्पून (गरम कढ़ाई में डालकर हल्का सा रोस्ट कर लीजिये)
-इलाइची - ५ -६(छील कर कूट लीजिये)
-घी - १ टेबल स्पून
-नमक - आधा छोटी चम्मच

विधि - How to make Modak

गुड़ और नारियल को कढ़ई में डाल कर गरम करने के लिये रखें. चमचे से चलाते रहें, गुड़ पिघलने लगेगा चमचे से लगातार चला कर भूने, जब तक गुड़ और नारियल का गाढ़ा मिश्रण न बन जाय. इस मिश्रण में काजू, किशमिश, खसखस और इलाइची मिला दें. यह मोदक में भरने के लिये पिठ्ठी तैयार है.

२ कप पानी में १छोटी चम्मच घी डाल कर गरम करने रखिये. जैसे ही पानी में उबाल आ जाय, गैस बन्द कर दीजिये और चावल का आटा और नमक पानी में डाल कर चमचे से चला कर अच्छी तरह मिला दीजिये और इस मिश्रण को ५ मिनिट के ढक कर रख दीजिये.

अब चावल के आटे को बड़े बर्तन में निकाल कर हाथ से नरम आटा गूथ कर तैयार कर लीजिये. यदि आटा सख्त लग रहा हो तो १ - २ टेबल स्पून पानी और डाल सकते हैं, एक प्याली में थोड़ा घी रख लीजिये. घी हाथों में लगाकर आटे को मसलें, जब तक कि आटा नरम न हो जाय. इस आटे को साफ कपड़े से ढक कर रखें.

हाथ को घी से चिकना करें और गूथे हुये चावल के आटे से एक नीबू के बराबर आटा निकाल कर हथेली पर रखें, दूसरे हाथ के अँगूठे और उंगलियों से उसे किनारे पतला करते हुये बढ़ा लीजिये, उंगलियों से थोड़ा गड्ढा करें और इसमें १ छोटी चम्मच पिठ्ठी रखें. अँगूठे और अँगुलियों की सहायता मोड़ डालते हुये ऊपर की तरफ चोटी का आकार देते हुये बन्द कर दीजिये. सारे मोदक इसी तरह तैयार कर लीजिये.

किसी चौड़े बर्तन में २ छोटे गिलास पानी डाल कर गरम करने रखें. जाली स्टैन्ड लगाकर चलनी में मोदक रख कर भाप में १० - १२ मिनिट पकने दीजिये. आप देखेंगे कि मोदक स्टीम में पककर काफी चमक दार लग रहे हैं. मोदक तैयार हैं.

मोदक (Modak) को प्लेट में निकाल कर लगायें, और गरमा गरम परोसिये और खाइये.

लापतागंज

तत्हीर कौसर, पटना। ग्रामीण भारत के विविध रंगों में डूबा और आम आदमी की रोजमर्रा जिंदगी के संघर्ष पर केंद्रित व्यंग्यात्मक शो-लापतागंज एक बार फिर वापसी के लिए तैयार है।

शो में मुकुंदी लाल गुप्ता (आम आदमी) का किरदार निभा रहे चर्चित अभिनेता रोहिताश्व गौड़ ने जागरण को बताया कि शो में पांच साल का लीप लिया गया है। दर्शकों की मांग पर इस शो को नए अंदाज में दूसरी दफा पेश किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पिछली बार की तरह ही यह शो दर्शकों को गुदगुदाएगा और लापतागंज में रहने वाले लोग विषम परिस्थितियों के खिलाफ लड़कर खुशहाल जिंदगी व्यतीत करते नजर आएंगे। आम आदमी इस बार खीजा हुआ दिखेगा क्योंकि कस्बे में बिजली और पानी का कनेक्शन तो आ गया है मगर सिर्फ घंटे के लिए। एटीएम है मगर नॉट वर्किंग का बोर्ड लगा है।

पांच साल में इसी तरह के हुए विकास से वह तंग आ चुका है। इसके साथ ही दिखाया जाएगा कि किस तरह नई तकनीक जैसे मोबाइल और टीवी लोगों को करीब लाने के बजाए एक दूसरे से दूर कर रही है। इस बार कहानियां शरद जोशी की न होकर कई व्यंग्यकारों की होंगी। गौड़ ने बताया कि अपने बेटे चुकंदी लाल के बिगड़ैल निकल जाने और लौंडा लाला की बेटी के साथ प्रेम प्रसंग के कारण वो काफी परेशान दिखेंगे। जे बात और ओजी एक बार फिर दर्शकों की नियमित बातचीत का अहम हिस्सा बन जाएगा। अनुज कपूर, ईवीपी एवं बिजनेस प्रमुख ने कहा लापतागंज ने हमारे दर्शकों के दिल में खास जगह बनायी है। प्रशंसकों के अनुरोध पर हमने दूसरे सीजन की वापसी का फैसला किया है। इंदुमति, सुरीली, कछुआ काका, ऐजी और बीजी के नए अवतारों के साथ लापतागंज १० जून को सब टीवी पर प्रसारित होगा।

घर बैठे सृष्टी एग्रो मंगने के लिए भर कर भेजें

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः...
संस्था का नामः...
पूरा पताः..
ग्राम :....................................तहसील :...

जिलाः..................................राज्यः...........................पिन कोड ☐☐☐☐☐☐

दूरभाष कार्यः..................................निवासः..................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :१५० ☐ तीन वर्ष३५०: ☐ पांच वर्ष :५०० ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :..................................
बैंक का नामः.................................. ड्राफ्ट चेक क्रमांकः......................दिनांकः...............
स्थानः.................................. प्रतिनिधि का नामः......................हस्ताक्षर सदस्यः...............
दिनांकः......................

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

फर्टीगेशन ऑटोमेशन प्रणाली की जानकारी मिलेगी राजस्थान के किसानों को

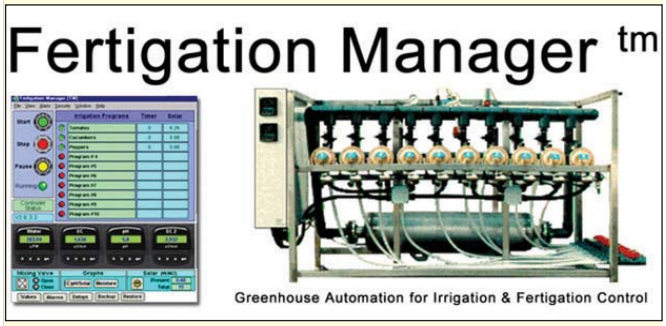

जयपुर राजस्थान में प्रदेश सरकार कृषि पर अधिक ध्यान दे रही हैं ड्रिप सिंचाई पद्धति के बाद अब प्रदेश सरकार किसानों

के लिए 'फर्टीगेशन ऑटोमेशन' विधि से किसानों को रूबरू कराने जा रही हैं इस विधि से किसानों को और कृषि क्षेत्र में काफी लाभ होगें

ड्रिप इरीगेशन सिस्टम के बारे में पूरा राज्य जानने लगा हैं इसीके चलते फर्टीगेशन एक ऐसी नियंत्रित सिंचाई प्रणाली है, जिसमें उर्वरक, मिट्टी तत्व या अन्य जल घुलनशील पदार्थों की सुनिश्चित मात्रा होती है, जो कि कृषि उत्पादन दक्षता में वृद्धि के साथ ही पर्यावरण प्रदूषण को भी कम करती है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि राज्य सरकार इजराइल के साथ मिलकर खारे पानी से सिंचाई प्रबंधन पर कार्यकर रहा है।

राजस्थान सरकार व एम्बेंसी ऑफ इजराइल के संयुक्त तत्वावधान में फर्टीगेशन ऑटोमेशन प्रणाली पर आयोजित सेमिनार में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि कृषि क्षेत्र प्राथमिकता सूची में सबसे पहले आता हैं इसलिए कृषि क्षेत्र में दक्षता बढ़ाने के लिए तरह तरह की उपाययोजना की जा रही हैं जैसे राज्यमें स्प्रिंकल व ड्रिप सिंचाई पद्धतीसे सभी वाकिफ हैं उसी तरह अब फर्टीगेशन ऑटोमेशन पद्धती का भी राज्य में प्रचार किया जायेगों पिछले दिनों इजराइल का दौरा कर आये राजस्थान के मुख्यमंत्री का कहना है कि राजस्थान और इजराइल दोनों की जलवायुपरिस्थितियां एकसमान हैं इसलिए इजराइल में जो तकनीक विकसित हो रही है वह राजस्थानके लिए काफी उपयोगी हैं राजस्थान के किसानों में कृषि दक्षता बढ़ाने के लिए फर्टीगेशन ऑटोमेशन तकनीक काफी लाभदायक साबित होगीं इस सेमिनार में इजराइल के जल विशेषज्ञ उरी साहनी ने भविष्य की कृषि और सिंचाई क्षमता पर व्याख्यान दिया।

कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर विधेयक, 2013, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर विधेयक, 2013 व कृषि विश्वविद्यालय, कोटा विधेयक, 2013 संशोधित रूप में पारित

जयपुर, 30 अ स्त। रा%य विधानसभा ने शुक्रवार को कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर विधेयक, 2013, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर विधेयक, 2013 एवं कृषि विश्वविद्यालय, कोटा विधेयक, 2013 को संशोधित रूप में ध्वनिमत से पारित कर दिया।

इससे पहले प्रभारी मंत्री श्री मुरारी लाल मीणा ने तीनों विधेयकों को सदन के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद विधेयकों पर हुई बहस के जवाब में बताया कि रा%य में कृषि विश्वविद्यालय स्थापना करने का मुज़्य उद्देश्य कृषि को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि सरकार की सोच है कि युवाओं को कृषि से जोड़ा जाये और किसान कृषि से विमुख नहीं हो। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों में वहां कि भौ ोलिक परिस्थिति के अनुरूप काम शुरू किये जायें े।

उन्होंने कहा कि किसानों को सही बीज उपलज़्ध कराने की मंशा से हमारे कृषि विश्वविद्यालय से बाजरा व मज़्का के हाईब्रिड बीज तैयार किया या। उन्होंने बताया कि हमारे यहां से बाजरा की जो हाईब्रिड बीज एस एफ सी आई एल तैयार किया उसकी कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई है। उन्होंने बताया कि मज़्का का जो बीज तैयार किया ये उसकी पैदावार को हम स्वयं खेत तक जाकर देंखे जिसके अ%छे परिणाम सामने आये हैं। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की यी मज़्का के बीज से बांसवाड़ा में रिकार्ड पैदा हुई है। श्री मीणा ने बताया कि प्रत्येक विश्वविद्यालय के लिए 27 करोड़ रुपये के बजट प्रावधान किया या है तथा आवर्ती मद के लिए दो करोड़ 50 लाख रुपये स्वीकृत किये हैं। इससे पहले सदन ने तीनों विधेयकों को जनमत जानने के लिए परिचालित करने के प्रस्ताव को ध्वनिमत से अस्वीकार कर दिया।

बीच उत्पादन कार्यक्रम को दे प्राथमिकता-अध्यक्ष, राजस्थान राज्य बीज निगम

राजस्थान रा%य बीज नि म के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र सिंह राठौड़ ने अधिकारियों से कहा है कि वे बीज उत्पादन कार्यक्रम को सर्वो%च प्राथमिकता दें और पूरी कोशिश यह है कि कृषकों को ुणवत्तायुज़्त बीज पर्याप्त रूप से सुलभ हो सके।

श्री राठौड यहां पंत कृषि भवन के सभा में आयोजित बीज नि म के क्षेत्रीय प्रबन्धक, संयंत्र प्रबन्धक एवं मुज़्यालय स्थित अधिकारियों की बैठक को सज़्बोधित कर रहे थे। बैठक में बीज उत्पादन, बीज विधायन आततैर बीज विपणन के बारे में विचार-विमर्श किया या।

उन्होंने कहा कि कृषि जलवायु की विषमताओं के कारण राजस्थान में फसल उत्पादन हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है, इसलिये हमारी जिज़्मेदारी है कि कृषक हित एवं उनके सर्वा ीण विकास के लिए ज़्भीरता से सोंचे। साथ ही उत्तम सर्वांगिण वाले बीज राज्य में उत्पादित कर के कृषक को उचित मूल्य एवं सही समय पर उपलज़्ध कराने की पूरी कोशिश करें।

उन्होंने बीज की गुणवत्ता में सही तोल रखने पर व सही समय पर विधायन कार्य पूर्ण करने के लिए मशीनों के रख-रखाव के बारे में भी सज़्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये। रबी फसल के लिए बीज की व्यवस्था के सज़्बन्ध में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि नि म में अच्छा कार्य करने वाले अधिकारियों को पुरस्कृत किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को यह भी सुझाव दिया कि संबंधित इकाई के प्रभारी नि म की बेहतर कार्यप्रणाली के लिए अपनी शिकायत एवं सुझाव सीधे ही नि म अध्यक्ष को भिजवा सकते हैं।

इस अवसर पर नि म के प्रबन्ध निदेशक श्री शज़्ति सिंह राठौड़ ने विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी और अधिकारियों को बीज उत्पादन, विधायन एवं विपणन के सज़्बन्ध में आवश्यक निर्देश दिये।

बैठक में नि म के महाप्रबन्धक श्री दयाल सिंह चौधरी, मुज़्य प्रबन्धक श्री अभिताभ पाण्डेय एवं वरिष्ठ प्रबन्धक श्री ोपाल लालस सहित नि म के वरिष्ठ अधिकारी ण उपस्थित थे।

इतिहास लिखा राज्य में साढ़े वर्ष में 6300 मेघावत विद्युत उत्पादन-सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री

ऊर्जा, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिज़ी, सूचना एवं जनसज़्पर्ज़ मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने क़हा कि राज्य सरकर ने विगत साढ़े चार वर्षो में 6300 मेगावाट विद्युत उत्पादन ज़र विद्युत ज़ो क्षेत्र में नया इतिहास रचा है।

डॉ. सिंह जिले की केटपूतली पंचायत समिति के बीठलोदा गांव में नवक्रमोन्नत माध्यमिक विद्यालय एवं राजज़ीय बालिज़ा प्राथमिक विद्यालय के उद्घाटन समारोह के मुज़्य अतिथि क रूप में सज़्बोधित ज़र रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में आगामी समय में 24 घंटों विद्युत उपलज़्ध करायी जायेगी जिसके समुचित प्रबन्ध तत्परता से ज़िये जा रहे हैं। **उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों के हित की सुरक्षा के लिए संकल्पबद्ध से प्रयास जारी है।** उन्होंने क़हा कि किसानों के 90 पैसे प्रति यूनिट दर से विद्युत उपलज़्ध ज़राई जा रही है जबकि वास्तव एज़ यूनिट 3 रुपये 70 पैसे आती है। ज़िसानों ज़ो प्रति यूनिट बढ़ी हुई दर ज़ी राशि राज्य सरज़ार द्वारा प्रति वर्ष 5700 ज़रोड़ रुपये ज़ा विद्युत ऊर्जा मंत्री ने सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन क्षेत्र में राजस्थान का देश में पहला स्थान बन गया है तथा प्रदेश में ऊर्जा अन्य वैज़ल्पिज़ स्रोतों से भी विद्युत उत्पादन ज़े ज़ारगर प्रयास ज़िये जा रहे है। उन्होंने ज़हा ज़ि राज्य सरज़ार द्वारा आवश्यज़तानुसार प्रदेश ज़े विभिन्न क्षेत्रों में इंदिरा गांधी नगर और चज़्बर नदी से भी पेयजल उपलज़्ध ज़राने ज़े लिए वृहद स्तर पर पेयजल योजनाएं स्वीज़ृत ज़ी जाज़र उन्हें मूर्त रूप दिया जा रहा है।

उन्होंने राज्य सरज़ार ज़ी जनज़ल्याणज़ारी मुज़्यमंत्री अन्न सुरक्षा योजना, मुज़्यमंत्री नि:शुल्ज़ दवा योजना, मुज़्यमंत्री नि:शुल्ज़ जांच योजना, जननी शिशु सुरक्षा योजना, मुज़्यमंत्री पशुधन नि:शुल्ज़ योजना सहित अन्य फ्लैगशिप योजनाओं एवं विभिन्न ज़ल्याणज़ारी योजनाओं ज़े बारे में प्रज़ाश डालते हुए ग्रामीणों ज़ा आह्वान ज़िया ज़ि वे इन योजनाओं ज़ा भरपूर लाभ उठाएं। सूचना एवं जनसज़्पर्ज़ मंत्री ने ज़हा कि क़ोटपूतली क्षेत्र में 400 ज़े.वी. ज़ा एज़ ग्रिड सब स्टेशन, 33 ज़े.वी. 17 एवं 132 ज़े.वी. ज़े सब ग्रिड स्टेशन स्वीकृत किये गये हैं जिन्हें तेजी से स्थापित ज़िया जा रहा है इसी प्रज़ार 620 सिंगलफेज पेयजल योजनाएं स्वीज़ृत ज़र इस क्षेत्र ज़े लोगों के पेयजल उपलज़्ध कराने के समुचित प्रबंध ज़िये गये है।

उन्होंने नवक्रमोन्नत राजकीय विद्यालय में सिंगल फेज स्थापित करने के साथ ही बीठलोदा गांव में ट्यूब वैल एवं पानी ज़ी टंज़ी बनाने ज़ी भी घोषणा ज़ी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संसदीय सचिव एवं क्षेत्रीय विधायज़ श्री रामस्वरूप ज़साना ने ज़हा ज़ि राज्य सरज़ार ने ज़ोटपूतली क्षेत्र में विज़ास ज़ा नया ज़ीर्तिमान बनाया है वहीं इस क्षेत्र ज़े गांव में प्रयाप्त विद्युत उपलज़्ध ज़राने ज़े लिए 400 क.वी., 132 ज़े.वी. एवं 33 के.वी. के ग्रिड स्टेशन स्विकृत कर जिन्हें स्थापित ज़िया जा रहा है। ज़िसानों और ग्रामीणों ज़ो निर्बाध रूप से विद्युत उपलज़्ध हो सज़ेगी। ज़ार्यक्रम ज़ो विशिष्ठ अतिथि ज़े रूप पूर्व मुज़्य सचेतज़ श्री हरि सिंह महुआ, श्री चन्द्र प्रज़ाश फामड़ा, श्री जे.पी. वर्मा एवं प्रोफेसर राजीव उपाध्याय, विभा उपाध्याय ने भी सज़्बोधित ज़िया। ज़ार्यक्रम ज़ा संचालन डॉ. ज़ैलाश गुर्जर ने ज़िया। ज़ार्यक्रम में जनप्रतिनिधिगण बड़ी संज़्या में ग्रामीणजन मौजूद थे।

राज्य सरकार ने किया 32 सौर किसानों को सम्मानित

मुज़्यमंत्री श्री अशोक हलोत व केन्द्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री फारूख अज़्दुल्ला ने आज यहां बिड़ला सभा ार में आयोजित सौर ऊर्जा पज़्प विषयक राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में रा%य के 32 प्र तिशील किसानों को राजस्थान सौर ऊर्जा सरताज पुरस्कार से सज़्मानित किया, जिनमें छह महिला कृषक शामिल हैं।

सज़्मानित होने वालों में अजमेर की कृषक श्रीमती अर्चना देवी, अलवर की श्रीमती पूनम, बीकानेर की श्रीमती सरस्वती देवी, जालौर की श्रीमती मैथीदेवी, कोटा की श्रीमती ममता मीणा एवं उदयपुर की श्रीमती रूक्मणी बाई सज़्मिलित है। इसी तरह बांसवाड़ा से श्री शंकर लाल त्रिवेदी, बारां से श्री णपत लाल ना र, बाड़मेर से श्री चेलाराम, भरतपुर से श्री लक्ष्मीनारायण, भीलवाड़ा से श्री विष्णु कुमार, बून्दी से श्री सत्यनारायण, चित्तौड़ ढ़ से श्री अक्षय कुमार, चूरू से श्री हरिराम, दौसा से श्री रामकरण, धौलपुर से श्री हरभजन सिंह, डूं रपुर से श्री नरेश चन्द्र डामारे, हनुमान ढ़ से श्री अमरसिंह, जयपुर से श्री खेमाराम, जैसलमेर से श्री अलसीसिंह, झालावाड़ से श्री पूरालाल, झुंझुनूं से श्री मोहरसिंह, जोधपुर से श्री सूरजनाथ चेला, करौली से श्री सुनील कुमार, ना ौर से श्री उज़्मेद सिंह, पाली से श्री महेन्द्र, प्रताप ढ़ से श्री प्रहलाद सिंह, राजसमन्द से श्री प्रेमप्रकाश, सवाई माधोपुर से श्री मोरपाल, श्री ं ान र से श्री ज दीश नेहरा, सीकर से श्री झाबरसिंह एवं सिरोही से कृषक श्री बाबूलाल को सज़्मानित किया या।

किसानों को परेशान नहीं होने दिया जाए-ऊर्जा मंत्री

जयपुर, ऊर्जा मंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने शुक्रवार को रा%य विधानसभा में बताया कि किसानों सहित आम उपभोज़्ताओं को अनावश्यक रूप से परेशान नहीं करने के बिजली कज़्पनियों को निर्देश दे रखे हैं।

डॉ. सिंह शून्यकाल में इस सज़्बन्ध में हुई चर्चा में हस्तक्षेप कर रहे थे। उन्होंने आश्वस्त किया कि इन निर्देशों की पालना सुनिश्चित हो, इस बारे में आवश्यक कदम उठाए जाएं।

अल्पसंज़्यक वर्ग के आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक उन्नयन हेतु संगठित प्रयास आवश्यक - अल्प संज़्यक आयोग

जयपुर, राज्य अल्पसंज़्यक आयोग के अध्यक्ष श्री माहिर आजाद ने कहा है कि अल्पसंज़्यक वर्ग के आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक उन्नयन के लिये संबंधित विभागों के अधिकारी संगठित प्रयास करें, ताकि यह वर्ग भी समाज की मुज़्य धारा से जुड़ सकें। श्री आजाद शुक्रवार को प्रधानमंत्री के 15 सूत्रीय कार्यक्रम की समीक्षा हेतु आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुये संबोधित कर रहे थे। उन्होंने 15 सूत्रीय कार्यक्रम से जुड़े विभागों के अधिकारियों को समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने के निर्देश देते हुये कहा कि अल्पसंज़्यक वर्ग के शत प्रतिशत बालकों का नामांकन कराने एवं उनके विद्यालय ठहराव पर विशेष ध्यान देने के लिए कार्ययोजना बनायें। उन्होंने अल्पसंज़्यक वर्ग के बेरोजगार युवाओं को विभिन्न ट्रेडों में अधिकाधिक प्रशिक्षण दिलाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये कहा कि अल्पसंज़्यक वर्ग के लोगों को स्वरोजगार के लिये प्रेरित करें और स्वरोजगार हेतु अधिकाधिक ऋण दिलाना सुनिश्चित करें । उन्होंने कहा कि बैंक छोटे-छोटे तकनीकी कारणों से अल्पसज़्यक वर्ग के व्यज़्तियों के ऋण आवेदन पत्र निरस्त नहीं करें।

उन्होंने मदरसों के आधुनिकरण व कज़्प्यूटर शिक्षा की चर्चा करते हुये बताया कि उर्दू के द्वितीय श्रेणी अध्यापकों एवं व्याज़्याताओं की भर्ती प्रक्रियाधीन है । उन्होंने अल्पसंज़्यक समुदाय के क्षेत्रों में भवन रहित आंगनबाडी केन्द्रों , प्राथमिक विद्यालयों, उपस्वास्थ्य केन्द्रों के साथ ही मिसिंग लिंक सडकों के प्रस्ताव भी तैयार करने के निर्देश दिये।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-६२ से मुद्रीत किया और ३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४ यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com